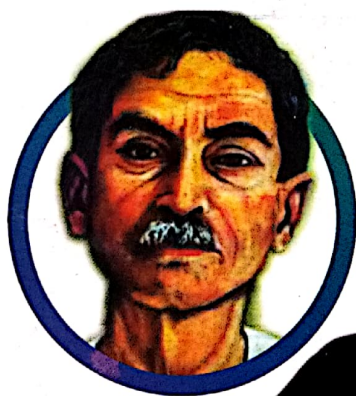


चेतना



अंक-28वां सितम्बर 2017



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हैं (बायें से दायें)

: श्री अरुण मिंज, उप महालेखाकार (पेंशन),
श्रीमती तान्या सिंह, व. उप महालेखाकार (प्रशासन), एवं
श्री अभिषेक सिंह, उप महालेखाकार (लेखा एवं वी. एल. सी.) ।

खड़े हैं (बायें से दायें)

: श्री मो० हाशिम अंसारी, व. ले. अ. -सह-प्रधान संपादक,
श्री राजेन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक-सह-स. संपादक,
श्री श्रीराम पाण्डेय, स. ले. अ. -सह-संपादक,
श्री आशीष कुमार, स. ले. अ. -सह-स. संपादक एवं
श्री पवन, कुमार, व. लेखाकार-सह-स. संपादक



सत्यमेव जयते



अंक-28वाँ

(अक्तुबर, 2016 से सितम्बर, 2017)

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

28वाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001

चेतना के इस 28वें अंक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

- स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
प्रकाशन : 'चेतना'
प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना -1
अंक-28वाँ : (अक्तुबर, 2016 से सितम्बर, 2017)
मुख्य पृष्ठ : हिन्दी साहित्य के प्रति समर्पित राष्ट्र-कवि
मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा
मुद्रक : जी0 बी0 प्रिंटर्स, पोपुलर प्लेस, लंगरटोली चौराहा, पटना- 4

चेतना परिवार

संरक्षक

श्री सी० सुरेश कुमार
महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति,
श्रीमती तान्या सिंह
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री अभिषेक सिंह
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री अरुण मिंज
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक
मो० हाशिम अंसारी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सम्पादक
श्री श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री आशीष कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक
श्री राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक

सहायक संपादक
श्री पवन कुमार
वरीय लेखाकार

सहायक संपादक
श्री सुरेन्द्र दूले
लेखाकार

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या

- 1 चेतना परिवार
- 2 अनुक्रमणिका
- 3 महालेखाकार का संदेश
- 4 वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश
- 5 उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश
- 6 उप महालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी) का संदेश
- 7 सम्पादकीय
- 8 महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ (2016-17)
- 9 पुरस्कार वितरण

II
III
V
VI
VII
VIII
IX
XI
XIII

पृ.सं.	रचना	रचनाकार श्री/सुश्री/श्रीमती/मो०	पदनाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ सं०
01	कुशल प्रशासक	राजेन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	कविता	1
02	मुक्ति का रास्ता	राशिद जमील	व०लेखाकार	लेख	3
03	हमारी किताब	शादाब, पुत्र- मो० आफताब अंसारी	व०लेखाकार	कविता	5
04	रावण नहीं मरेगा	अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय	स०ले०अ०	लेख	6
05	ऋतुराज बसंत	नायला समरीन, पुत्री मो०आफताब अंसारी	व०लेखाकार	कविता	12
06	समय और सांसें	राजेन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	लेख	13
07	उत्प्रेरक विचार	लगनी देवी, पत्नी श्री राम अनुग्रह राय	सेवक (कैंटीन)	लेख	16
08	वीर जवान मोदी जी	निभा कुमारी, पुत्री- श्री अनिल कुमार सिंह	स०ले०अधिकारी	कविता	17
09	शिष्टाचार	सुमन संगम	लेखाकार	कहानी	18
10	अपनी राजनीति का खेल	नीलम सिंह, पुत्री- श्री अनिल कुमार सिंह	स०ले०अधिकारी	कविता	21
11	इंटरनेट से लाभ-हानि	सलाउद्दीन अंसारी	स०ले०अ०	लेख	22
12	रिश्तों का बाजार	आफताब अंसारी	व०लेखाकार	कविता	24
13	नौ कन्यायें	सत्येन्द्र माँझी	एम०टी०एस०	लेख	25
14	अकरम-बकरम बम्बे बोल	भारती, पुत्री- श्री संतोष कुमार सिंह	लेखाकार	कविता	26
15	कर्म	लगनी देवी, पत्नी श्री राम अनुग्रह राय	सेवक (कैंटीन)	लेख	27

पृ.स.	रचना	रचनाकार श्री/सुश्री/श्रीमती/मो०	पदनाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ सं०
16	माँ	भारती, पुत्री-श्री संतोष कुमार सिंह	लेखाकार	कविता	29
17	स्वप्न पर विजय	मन्दु कुमार सिन्हा	लेखाकार	लेख	30
18	दरिया तलाश कर	राशिद जमील	व०लेखाकार	गजल	32
19	गाँधीजी का ग्राम स्वराज	श्री धीरज कुमार	लेखाकार	लेख	33
20	चतुर चित्रकार	आदित्य कश्यप, पुत्र- श्री संतोष कु०सिंह	लेखाकार	कविता	35
21	बौद्ध धर्म	श्री धीरज कुमार	लेखाकार	लेख	36
22	मेरी गाथा	संगीता कुमारी	लेखाकार	कविता	38
23	वैष्णो देवी यात्रा	श्री विजय कुमार	स०ले०अधिकारी	संस्मरण	39
24	बाल श्रम एक अभिशाप	श्री सुमन संगम	लेखाकार	कविता	41
25	पीड़ा	संगीता कुमारी	लेखाकार	कविता	43
26	हिमालय दर्शन	श्री अनमोल आनंद	एम०टी०एस०	संस्मरण	44
27	एक प्यारी सी याद	श्री विदु शेखर	लिपिक	कविता	49
28	पुत्रवती भव	सत्येन्द्र माँझी	एम०टी०एस०	लेख	51
29	बंदर और गिलहरी	ऋषभ माँझा, पुत्र- श्री सत्येन्द्र माँझी	एम०टी०एस०	कविता	52
30	यात्रा वृत्तांत	शकुन्तला देवी, पत्नी श्री दुलारी शरण सिंह	व०लेखाकार	संस्मरण	53
31	चूँ-चूँ चिड़िया	श्री रंजीत कुमार	डी०ई०ओ०	कविता	59
32	अनुभूति	श्री संजय कुमार ओझा	व०लेखाकार	गजल	60
33	माई के दुलार	बनवारी सिंह	लेखाकार	कविता	62
34	ऊँट	ऋषभ माँझी पुत्र- श्री सत्येन्द्र माँझी	एम०टी०एस०	कविता	63
35	कटहर के बिया	श्री श्रीराम पाण्डेय	स०ले०अ०	लेख	64



सत्यमेव जयते



संदेश

आज बहुत ही हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि हिन्दी पखवारा के इस शुभ बेला में हमारा कार्यालय लगभग शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में सम्पन्न कर मुख्यालय का मान बढ़ाया है तथा राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हिन्दी में प्रचार-प्रसार के कार्य में सराहनीय सहयोग प्रदान कर रहा है। गृह पत्रिका 'चेतना' भी इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस अंक में विभिन्न अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा हिन्दी के प्रति अपने समर्पण, प्रेम, आदर एवं सम्मान का परिचय कविताओं, लेखों एवं संस्मरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मैं उनकी इस भावना एवं सतत् प्रयास हेतु उन्हें साधुवाद देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि हिन्दी के उत्थान में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का सतत् प्रयास अक्षुण्ण बना रहे।

शुभकामनाओं सहित।

सी. कुमार

सी० सुरेश कुमार

महालेखाकार (ले० व ह०)
बिहार, पटना।



सत्यमेव जयते



संदेश

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 28वां अंक इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संपादक मंडल के सहयोग से आपके समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए हम सब का दायित्व है कि सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा अपरिहार्य परिस्थितियों में ही अंग्रेजी का प्रयोग करें।

हिन्दी भाव-सम्प्रेषण की सरल भाषा है। फलस्वरूप इसके माध्यम से पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश की गई है, जो कारगर साबित होता दिख रहा है। भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा केन्द्रीय कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका सुखद परिणाम पूरे देश में परिलक्षित है।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं अपनी तरफ से शुभकामनाएँ व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने हिन्दी में कार्य कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया एवं कार्यालय का सम्मान बढ़ाया है।

धन्यवाद।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

तान्या सिंह

तान्या सिंह

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)



संदेश

हिन्दी हमारी देश की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है। चौदह सितंबर सन् उन्नीस सौ उनचास को भारत के राजभाषा के रूप में इसको मान्यता मिली। तभी से चौदह सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। यद्यपि इसका विकास एवं प्रचार प्रसार उत्तरोत्तर हो रहा है, परंतु इसका प्रवाह बहुत ही संतोषजनक नहीं है। इसके लिये हम सब को मिलकर प्रयास करना चाहिये। हमें कोशिश करनी चाहिये कि हमारे कार्यालय में भी जहाँ तक संभव हो सके, काम-काज हिन्दी में ही किये जायें।

हमारे कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। इस पत्रिका का उद्देश्य है कि हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति अभिरुचि एवं रचनात्मकता बनी रहे। 'चेतना' में अपनी रचना देने के लिए सभी रचनाकारों को धन्यवाद देता हूँ। साथ ही इसके साजो-सज्जा, कलेवर एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को भी साधुवाद।

जय हिन्दी ।

आभिशेक सिंह

अभिषेक सिंह

उप महालेखाकार
(लेखा एवं वी० एल० सी०)



सम्पादकीय

हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 28वें अंक को हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि सहित जागरुकता लाने एवं इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के प्रचार एवं विकास के लिए सतत् प्रयत्न हो रहा है। तीव्र गति से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप से डालनी पड़ेगी। आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर यह संकल्प लेना होगा कि सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में ही किये जायेंगे। साथ ही हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार के मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर किया जायेगा।

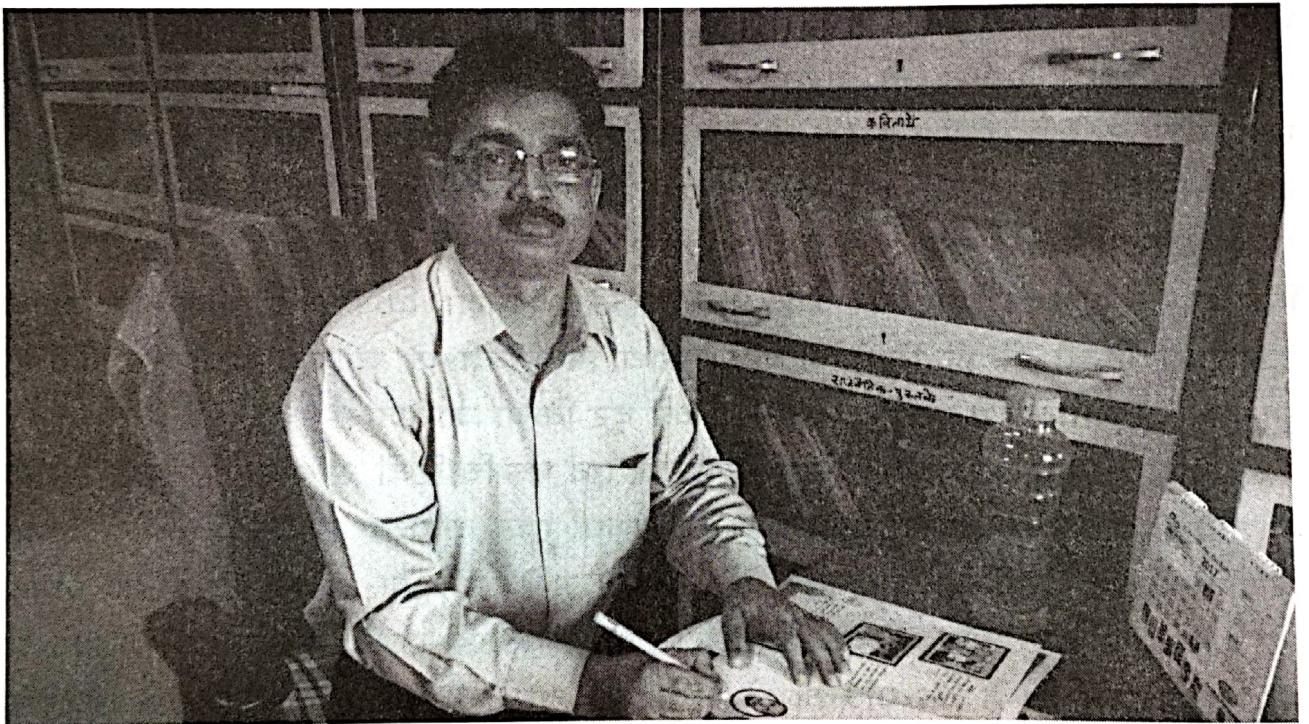
इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध एवं कविता इत्यादि प्रत्येक माह नियमित रूप से हिन्दी कक्ष को देते रहेंगे, ताकि पत्रिका अपने त्रैमासिक लक्ष्य को प्राप्त कर सके और पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकें। आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव से अवगत करायेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचना से इसे सुशोभित करने की कृपा करेंगे।

अंत में अपने हिन्दी-प्रेमी विद्वान, संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री सी० सुरेश कुमार तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं सहयोग से

यह पत्रिका प्रकाशित हो पा रही है। पत्रिका में सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय रही है। उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटिशः धन्यवाद। पत्रिका में त्रुटि नहीं हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है, तथापि यदि उसमें त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए क्षमा याचना है। अनुभवी एवं विद्वान पाठकवृंद के मार्गदर्शन एवं सुझाव की भी हमें अपेक्षा रहेगी।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

श्री श्रीराम पाण्डेय,
(संपादक)
स०ले०अधिकारी।



कार्यालय, महालेखाकार (ले० व ह०), बिहार, पटना। हिन्दी गतिविधियाँ-2016-17

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, जिसका विवरण निम्नांकित है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन:

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत वर्ष 2016-17 में कुल 2907 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें सभी हिन्दी/द्विभाषी में जारी किए गये। अंग्रेजी में जारी किए गये दस्तावेजों की संख्या शून्य रही।

2 हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2016-17 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,15,412 थी, जिनमें से 67,847 के उत्तर हिन्दी में दिए गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा हिन्दी में भेजे गये पत्रों की प्रतिशतता 100 प्रतिशत रही।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

वर्ष 2016-17 में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया। अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4 हिन्दी कार्यशाला:

वर्ष 2016-17 के दौरान इस कार्यालय में 6 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं, जिनमें कार्यालय के 63 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5 हिन्दी पुरस्कार योजना:

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2016-17 के दौरान मूल हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी दिवस के अवसर पर नकद पुरस्कार एवं प्रशस्तिपत्र से सम्मानित किया गया।

साथ ही इस कार्यालय द्वारा 'राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने में मीडिया की भूमिका' पर भाषण प्रतियागिता का आयोजन किया गया, जिसमें



विजयी प्रतिभागियों को भी नकद पुरस्कार एवं प्रशस्तिपत्र से सम्मानित किया गया।

6 हिन्दी-पखवारा समारोह का आयोजन:

वर्ष 2016 में 01 सितम्बर, 2016 से 14 सितम्बर 2016 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत् आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-निबंध-प्रतियोगिता, प्रारूप-लेखन एवं संक्षेपण प्रतियोगिता, हिन्दी-अनुवाद प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य पर पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

7 हिन्दी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 117 अधिकारी एवं 564 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। यहाँ 09 टंकक तथा 57 डाटा एंट्री ऑपरेटर हैं, जिनमें 09 टंकक तथा 12 डाटा एंट्री ऑपरेटर प्रशिक्षण के लिए शेष हैं।

8 हिन्दी पुस्तकों की खरीद:

इस कार्यालय में 2016-17 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल रु 58,230/- व्यय किए गये, जिसमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 30,000 रुपये व्यय किए गये।

9 हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2016-17 के दौरान इस कार्यालय में कुल 50,119 संचिकाएँ खोली गई, जिनमें 49,551 संचिकाओं में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गई।

इस प्रकार इस कार्यालय द्वारा कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतर लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है, जिसकी समीक्षा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में की जाती रही है। आशा है, आगामी सत्र में भी लक्ष्यों की पूर्ति शत-प्रतिशत की जा सकेगी।

■ ■ ■

पुरस्कार वितरण

वर्ष-2016

हिन्दी पखवारा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्र.सं	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों के नाम
1	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	श्री अंजनी कुमार (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	श्री चंदन कुमार बड़ई (व० अनुवादक), लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री आशीष कुमार, (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
2	प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण	प्रथम	श्री अंजनी कुमार (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	श्री आशीष कुमार, (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	श्री चंदन कुमार बड़ई (व० अनुवादक), लेखापरीक्षा कार्यालय)
3	बच्चों का काव्य पाठ	प्रथम	प्राची श्री, पुत्री-श्रीमती नीतु कुमारी (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	नायला समरीन, पुत्री-मो०आफताब अंसारी, (वरीय लेखाकार) (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	अर्पित, पुत्र-श्री दिलीप कुमार सिंह (वरीय लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
4	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	प्रथम	श्री शंकर लाल सिंह (लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		द्वितीय	श्री देव प्रकाश केशरी (लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	श्री संदीप कुमार सिंह (डी०ई०ओ०), (ले० एवं ह० कार्यालय)



क्र.सं	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों के नाम
5	स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	प्रथम	श्री रामावतार प्रसाद (व०ले०प०अ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री सोनू ओझा (डी०ई०ओ०), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	श्री राजेन्द्र कुमार (पर्यवेक्षक), (ले० एवं ह० कार्यालय)
6	हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता	प्रथम	श्री वीरेन्द्र साहू (क०अनुवादक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	मो० दानीश (क०अनुवादक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री दावर शेख (व०ले०प०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)

राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव प्रतिष्ठान, भारत सरकार, गृह मंत्रालय के निदेशानुसार 'सांप्रदायिक सद्भाव बनाये रखने में मीडिया की भूमिका' विषय पर आयोजित प्रतियोगिता में लेखा एवं ह० कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा उत्साह पूर्वक भाग लिया गया, जिसमें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्तिपत्र के साथ पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया, जिसका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्रम सं०	प्रतिभागियों के नाम	पदनाम	अभियुक्ति
1	श्री जितेन्द्र मलहोत्रा	लेखाकार	प्रथम
2	श्री राजेन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	द्वितीय
3	श्री सोनू ओझा	डी०ई०ओ०	तृतीय



राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक/हिन्दी कक्ष

कुशल प्रशासक

कार्यालय में आप जब से आये,
भाईचारे का सबक सबको सिखलाये।

तैंतीस साल की नौकरी में,
आप ए०जी० पहली बार आये।।
अपने दफ्तर के चैम्बर में बैठकर,
प्रेम का पाठ हम सबको पढ़ाये।।

आपके आने से दफ्तर में,
भाय और चिन्ता दूर हुई।।
तनाव भी अब लेश मात्र न रहा,
क्षमता ले कार्य में वृद्धि हुई।।

सभी यहाँ अब निर्भीक होकर,
काम करते और घर को जाते।।
समय पर आते समय से जाते,
अपना दुखड़ा सब आपको सुनाते।।

प्रशासकीय बैठक जब साथ में होती,
कार्य संपादन का गूढ़ बताते।।
सबको अपना भाई - बन्धु समझते,
जीने की राह सबको बताते।।

हर इंसान को इंसान समझते,
प्रदूषण क्षण में दूर भगाते।।
अब न यहाँ कोई बीमार पड़ेगा,
और न घातक बीमारी से मरेगा।।

प्रेम से नाश्ता सबके साथ करते,
सेवा निवृत्त कर्मियों की विदाई भी करते।।
अपनापन का अनोखा भाव लिए,
पहुँचकर घर वे फूले न समाते।।

कार्यालय कर्मियों की कमियाँ देखकर भी,
स्वयं उसका समाधान ढूँढ़ते।।
मिलती खुशी जब उन्हें कभी भी,
कार्यालय कर्मियों के साथ बांटते।।

साथ-साथ व0उप0 महालेखाकार आयीं,
सौम्य और सम्यता का संदेश लायीं।।
करती कार्यालय के कार्यों से प्रीति,
दफ्तर की हैं एक बड़ी कीर्ति।।

कार्यालय में आप जब से आये,
भाईचारे का सबक सबको सिखलाये।।
अपने दफ्तर के चैम्बर में बैठकर,
प्रेम का पाठ हम सबको पढ़ाये।।

■ ■ ■

मुक्ति का रास्ता

मो० राशिद जमील
वरीय लेखाकार, प्रशासन-2



सबसे पहले हमें यह जानना जरूरी है कि हम सब एक ही खुदा के बन्दे हैं और एक ही माता-पिता की संतान हैं। एक ही खुदा हम सबका पालनहार है। वह अपनी अद्भुत शक्ति से सब कुछ देख-सुन रहा है। एक निश्चित एवं निर्धारित समय तक ही रहने के लिए हमें यहाँ भेजा है। उसने हमें मुक्ति का रास्ता बता दिया है और वह है 'वन्दगी'।

कुर्आन पाक में एक जगह कहा गया है - हमने इन्सान और जिन्नात को अपनी वन्दगी के वास्ते पैदा किया। इस धरती पर इन्सान और जिन्नात दोनों रहते हैं। इन्सान की आबादी जब बढ़ती चली गई तो जिन्नात का वसेरा पहाड़ और जंगल बना।

'शैतान' जिन्न सम्प्रदाय से आता है और वन्दगी से इन्सान को रोकने का हर संभव प्रयास करता है। कुर्आन में कहा गया है कि 'शैतान' इन्सान का खुला दुश्मन है और तुम्हें वह वहाँ से देखता है, जहाँ से तुम उसे नहीं देख सकते। इन्सान में जितनी तरह की बुराइयाँ पायी जाती हैं, वह उसी के असर से हैं। जैसे - झूठ, चुगली, क्रोध, घृणा, घमण्ड, बलात्कार, खून-खराबा,

दूसरे की जान-माल, इज्जत-आवरु पर हमला करना आदि।

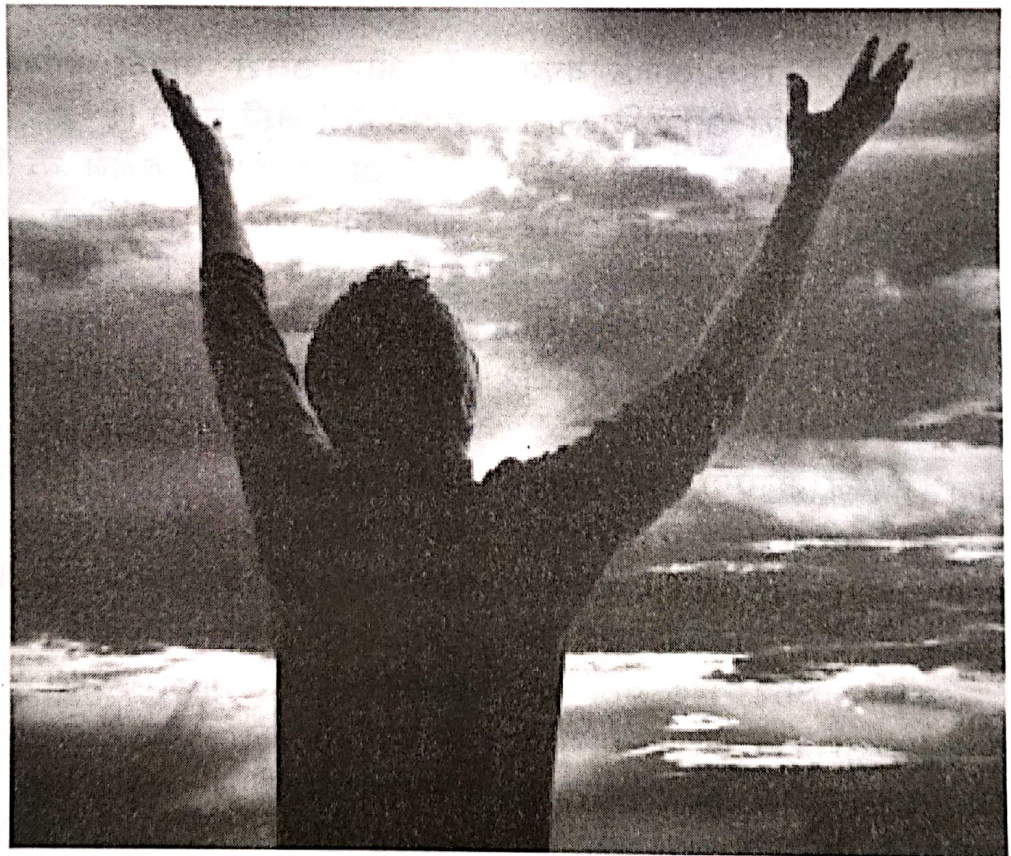
कुर्आन में एक जगह नसीहत दी गई है कि जब शैतान तुम्हें उकसावे में डाले, तो तुरन्त 'रब' की पनाह में आ जाओ। पनाह मांगना भी वन्दगी है। एक और जगह फरमाया गया है कि 'रहमान' के असल बन्दे तो वे हैं, जिनसे कोई गुनाह सरजद हो जाये, तो वे तुरन्त ही खुदा के सामने झुक जाते हैं और उनसे माफी मांग लेते हैं, हठधर्मिता नहीं करते।

अच्छा इंसान बनने के लिए तीन बुनियादी बातों पर दिल से यकीन रखना जरूरी है। खुदा-रसूल और आखिरत। ये तीनों ईमान के असल स्त्रोत हैं। जब दिल में ईमान होगा, तो शारीरिक अंग भी इस नूर से नूरानी होंगे। इसलिये कहा गया है कि ईमान वाले तो वे हैं, जो सुख में भी और दुःख में भी उसे याद करते हैं और दूसरों के जान-माल और इज्जत-आवरु की हिफाजत करते हैं। कुर्आन में यह भी कहा गया है कि हरगिज वह आदमी मोमिन नहीं, जो खुद तो भरपेट खये और उसका पड़ोसी भूखा रहे।

खुदा का वादा है कि हम ऐसे

नेककारों को इस दुनिया में भी पाकीजा जिन्दगी देंगे और आखिरत तो है ही ऐसे लोगों के लिए। हमारे लिए यह भी जानना जरूरी है कि हम सीधे रास्ते पर चले वगैर इस दुनिया में भी सही मंजिल पर नहीं पहुँच सकते, तो भला आखिरत की मंजिल में कैसे पहुँच सकते हैं। बचपन से जवानी, जवानी से बुढ़ापा को आज का इंसान पहुँच जाता है, पर एक लम्हे के लिए भी नहीं सोचता कि वह क्यों इस दुनिया में ढेर सारी नेमतों के साथ भेजा गया है।

इस समय समाज विध्वंस का शिकार है। असहिष्णुता और खुदगर्जी अपनी चरम सीमा पर है। गरीबों एवं मजलूमों की सुनने की किसी में ताकत नहीं है। आज हमने इसकी सुध नहीं ली, तो हमारी आखिरत बर्बाद हो जाएगी। आईये हम सब मिलकर अब उस परवरदिगार से दुआ करें, जो हम सबका पालनहार है और सबों के दिल के भेदों को भी जानता है, हमें सीधे रास्ते पर चलने की प्रेरणा एवं शक्ति दे, जिससे कि हम दोनों जहाँ से मुक्ति पा सकें।



हमारी किताब

मो० शादाब
पुत्र-मो०आफताब अंसारी
वरीय लेखाकार।



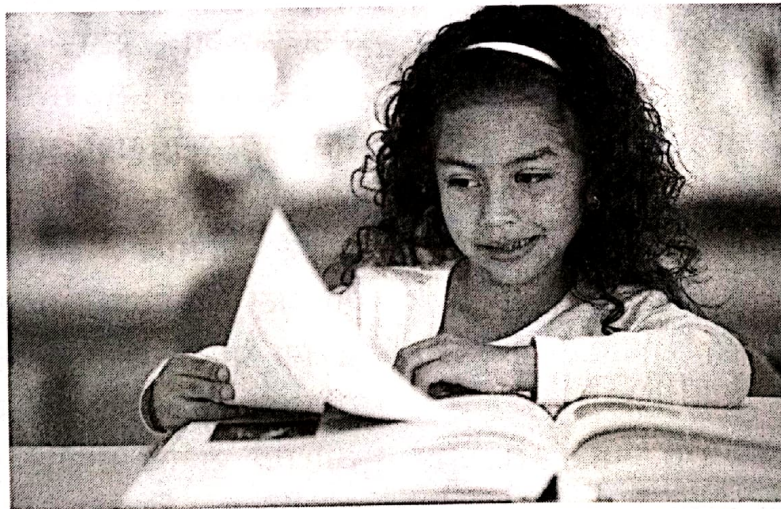
हम किताब के साथ बड़े हैं, लेकर इसे पहाड़ पर चढ़े हैं।
यही नदी है, यही सागर है, सभी ज्ञान का यह गागर है॥

यह तुलसी है, यही कबीर है, सच्चा मित्र यह अचूक तीर है।
धोखा झूठ फरेब नहीं है, इसमें कोई ऐब नहीं है॥

हम इसको लेकर खुश रहते, खेल-खेल अनचाहा सहते।
इससे जब करते हम बातें, हँसता दिन हँसती हैं रातें॥

पुस्तक ही है दोस्त हमारी, कितनी प्यारी कितनी न्यारी।
इसके बिना हम कभी न रहते, साथ में खाते साथ में सोते॥

यह मन के सपने बुनती, यह मन की बातें गुनती।
हम किताब के क्या गुण गायें, इसको हम बस पढ़े-पढ़ायें॥



■ ■ ■



अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय
स०ले०अ० आई०टी०एस०

रावण नहीं मरेगा

रूसी कथाकार लीयो टॉल्स्टॉय की कालजयी रचना “थ्री क्वेश्चन” के तीन प्रश्न क्या-क्या थे, क्या आप बता सकते हैं? यदि हाँ तो आप जागरूक पाठक हैं, और आप अवश्य ही चेतना में प्रकाशित सभी रचनाओं को पढ़ते होंगे। यदि नहीं तो, नेट अथवा अन्य माध्यम से, महान रूसी कथाकार के सम्मान में तीन प्रश्न क्या थे, ज्ञात करें और दण्डस्वरूप अथवा पश्चाताप के रूप में चेतना में प्रकाशित सभी रचनाओं को पढ़ें। मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरे इस आग्रह को अन्यथा नहीं लेंगे और इसे ठुकराएंगे नहीं। अब मैं निश्चित और बेफिक्र हूँ कि जागरूक पाठक मेरी आग्रह को स्वीकार कर वचनबद्ध होने के नाते, मेरी इस रचना सहित इस पत्रिका की अन्य रचनाओं को अवश्य पढ़ेंगे। अब तक आप ऊपर अंकित तीन प्रश्न से अवगत हो गए होंगे, लेकिन प्रश्नों से आपका पिण्ड अभी छूटने नहीं जा रहा है। मेरी ओर से तीन प्रश्न आपके विचारार्थ प्रस्तुत हैं:-

(क) 5 और 8 का योगफल कितना होता है?

(ख) 875643 एवं 5638 का गुणनफल कितना होता है?

(ग) 59:सान्द्र साबुन के घोल से 10.

6 सेमी० त्रिज्या वाले बुलबुला के भितरी एवं बाहरी पृष्ठ पर दबाव कितना है? और इस दबाव के अन्तर के कारण यह कितने समय में फुट जाएगा?

अब आप सोच रहे होंगे कि उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर पत्रिका के किसी पृष्ठ पर दिया होगा और कहा जाएगा कि सही के लिए 1 और गलत उत्तर के लिए -1 अंकित करते हुए कुल प्राप्त अंक की गणना कर ली जाए। फिर उन प्राप्त अंकों के आधार पर आपके व्यक्तित्व के बारे में कुछ कहा जाएगा, जैसा कि आमतौर पर पत्रिकाओं में होता है, परन्तु यहाँ ऐसा नहीं है। आपने प्रश्न पढ़ लिया यही काफी है, उत्तर अपेक्षित नहीं है। हाँ इन प्रश्नों के संबंध में जो राय मैं रखने जा रहा हूँ, उससे आप शत-प्रतिशत सहमत है या नहीं, इस पर विचार-विमर्श आवश्यक है।

मेरी राय में पहला प्रश्न का उत्तर सबसे आसान है और इसका उत्तर कुछ ही पल में दिया जा सकता है, जबकि दूसरा प्रश्न पहले के मुकाबले कठिन है और इसके उत्तर में पहले के मुकाबले अधिक समय लगेंगे एवं तीसरा प्रश्न सर्वाधिक क्लिष्ट है। यदि आपने विज्ञान का अध्ययन नहीं किया है, तो

इसका समाधान टेढ़ी खीर है। समय की तो बात ही छोड़िए। लेकिन एक बात तय है, तीसरे प्रश्न के समाधान में पहले के दो प्रश्नों के मुकाबले अधिक समय लगेगा।

ऐसा क्यों है ?

सभी व्यक्तियों में सोचने-समझने, कार्य करने की क्षमता समान नहीं होती है। यह उस व्यक्ति के अंतःशक्तियों के विकास अथवा उत्थान पर निर्भर करता है। अंतःशक्तियों का सीधा संबंध अभ्यास से है। अभ्यास से दक्षता आती है। अतः शक्तियों का विकास होता है। अभ्यास जितना अधिक होगा, दक्षता उतनी ही बढ़ेगी। दक्षता जितनी अधिक होगी, कार्य का समय उतना ही कम होगा। ऊपर के प्रश्न 5 और 8 का योगफल का अभ्यास हम सभी बचपन से ही आज तक कई बार किए हैं। फलस्वरूप कुछ ही पल में उत्तर बताने में सक्षम हैं। पहले प्रश्न के मामले में हमारे मस्तिष्क का उक्त भाग अति सक्रिय है, जबकि शेष दो प्रश्न में अभ्यास की कमी के कारण मस्तिष्क का उक्त भाग सक्रिय नहीं हैं। अतः समाधान में लगने वाला समय क्रमशः अधिक होता जाता है।

शास्त्रों में कई ऐसे दृष्टांत हैं, जिसमें तपस्या के बल पर समुद्र को सुखाने, अग्निबाण (परमाणु बम के समान क्षमता) चलाने आदि शक्तियाँ वर्णित हैं। यह तपस्या ही अभ्यास है।

मुनियों ने निरन्तर अभ्यास से ये शक्तियाँ प्राप्त की थी। उनके लिए अग्निबाण चलाना उतना ही आसान था जितना कि हमलोगों के लिए पहले प्रश्न का उत्तर देना। शास्त्रों में उक्त शक्तियाँ प्राप्त करने को तपस्या कहा गया है। यह तपस्या बार-बार अभ्यास कर, दक्षता प्राप्त कर, दक्षता की उच्चतम शिखर को प्राप्त करना है। चूँकि शास्त्रों की भाषा क्लिष्ट और जनसामान्य के पहुँच से बाहर थी, अतएव उन्हें धर्म से जोड़ दिया गया। यही कारण है कि तपस्या धार्मिक शब्द हो गया। इसका अर्थ लगाया जाने लगा कि लंबी जटाओं वाला कोई मूनि, जो आँखें मूँदे किसी पहाड़ और कन्दरा में लम्बे समय से ध्यानस्थ हो।

चूँकि आर्यावर्त भूमि के वासी धर्मभीरु होते हैं, अतएव इन बातों एवं मान्यताओं को धर्म से जोड़ देने पर इसकी ग्राह्यता विस्तृत तो हुई, परंतु आँख मूँद कर, धर्म के नाम पर इन बातों को मान लेने की परम्परा के कारण कालान्तर में इसमें कट्टरपंथीपन (बदलाव के विरोधी), कुरीतियों आदि का समावेश होता चला गया। उदाहरण के तौर पर घर में तुलसी का पौधा एवं शम्मी का पौधा रखना शास्त्र सम्मत है, जिसका वैज्ञानिक आधार भी है। परन्तु धर्म के नाम पर रात के समय जब ये कार्बनडाइक्साइड का उत्सर्जन करते हैं, तो वह हानिकारक है। अर्थात् धर्म के नाम पर बाहर नहीं रखना कुरीति



एवं कट्टरपंथी है। ये कुरीतियाँ एवं मान्यताएँ, समस्या उत्पन्न करती हैं, जो जनसामान्य के कल्याण की आधारभूत सिद्धांत को तो पूरा नहीं ही करती, बल्कि इसके विपरीत समाज को अंधे कूप में धकेलने का काम करती हैं। इस संबंध में मैं एक दो आपबीती आपसे साझा करता हूँ।

दिवाली और सफाई

दिपावली का बड़ा ही गहरा संबंध साफ-सफाई से है। दिपावली के पूर्व से ही घरों का रंग-रोगन, घर के सामानों की साफ-सफाई का कार्य प्रारंभ कर दिया जाता है। घर में बचे अखबार, कटी-फटी पुस्तकें एवं अप्रयुक्त सामग्री आदि सफाई के नाम पर बेच दिए जाते हैं। यह प्रक्रिया लगभग प्रत्येक वर्ष कमोबेश प्रत्येक घरों में दिवाली के पूर्व दोहराई जाती है। रद्दी क्रेताओं का इस समय चाँदी रहती है। जितना वह साल में 11 माह में कमाता है, उससे अधिक कमाई दिवाली के इस एक माह में हो जाती है।

रद्दी क्रेताओं का पुराने अखबार एवं पुस्तकों के ढेर को समेटते हुए देखकर मेरा बालवय पुत्र पूछता है, क्या ये अंकल पढ़ने के लिए इसे ले जा रहे हैं? उसे हमलोग समझाते, नहीं, ये इसे ले जाकर पानी में गलाकर लूगदी बनाएँगे और इसी से तुम्हारी पुत्र नई कापियों और पुस्तकें तैयार होंगी। पुत्र नई कापियों की बात से उत्साहित हो जाता है और चाहता है कि

जल्दी से जल्दी वह इन रद्दी कागजों को ले जाए, ताकि नई कापियाँ उसे मिल सकें। ये बातें उसके मनमस्तिष्क में बैठ जाती हैं।

बात उस वर्ष की है, जब मेरा लड़का वर्ग-5 में पढ़ता था। रद्दी अखबार व पुस्तकों के साथ उसका सामान्य ज्ञान का किताब भी गलती से बेचा गया। दो-तीन दिनों के गहन खोज के बाद जब यह समाधान हो गया कि पुस्तक निश्चितरूपेण रद्दी वाला ले गया है, वह जोर-जोर से रोने लगा। कहने लगा कि वह मेरी पुस्तक को पानी में डाल कर लूगदी बना देगा। मुझे वह पुस्तक चाहिए, अन्यथा मैं स्कूल नहीं जाऊँगा। उसके जिद से समस्या विकट होती गई। एक उक्ति सूझी, नई पुस्तक खरीद ली जाए और उसके किसी मित्र के यहाँ जाकर एक्सरसाईज पूरी कर ली जाए। समझाने पर कहा, उसमें शिक्षक का हस्ताक्षर एवं सुधार अंकित था, अतएव इस प्रस्ताव पर वह सहमत नहीं हुआ। एक ही जिद पर अड़ा रहा कि जब तक पुस्तक नहीं मिलेगी, तब तक स्कूल नहीं जाऊँगा। घर का माहौल अशान्त हो गया। जल्दीबाजी में की गई बिक्री पर पछतावा होने लगा।

काफी माथापच्ची के बाद एक युक्ति सूझी, क्यों न रद्दी वाले से सम्पर्क किया जाए। शायद किताब मिल जाए। दूसरे दिन लगभग सभी संभावित गली मुहल्ले में घूम-घूम कर रद्दी वाले को खोजता रहा, परन्तु वह

नहीं मिला। ठीक ही कहा गया है, किसी व्यक्ति या वस्तु की महत्ता का तभी पता चलता है, जब उसकी सख्त आवश्यकता हो और वह आसानी से न मिले। अभी मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण वह उपेक्षित गली-गली चिल्लाकर फेरी लगाने वाला रद्दी वाला ही था, लेकिन मैंने भी ठान लिया था कि उसे खोज कर ही रहूँगा। अन्य कोई चारा भी नहीं था। पूछताछ एवं अथक भाग-दौड़ के बाद मैंने रद्दी वाले के मोहल्ले की जानकारी हासिल की और पुस्तक की चाह में पहुँच गया।

उक्त मुहल्ला भिखारी ठाकुर पुल, यारपुर के दक्षिणी में मलिन बस्ती, असंख्य झोपड़ियाँ, प्रत्येक झोपड़ी के सामने रद्दी लाने ले जाने वाली ट्राली, बड़ा विचित्र नजारा था। रद्दी वाले के हुलिया के आधार पर पूछताछ करते-करते आखिरकार उस रद्दी वाले झोपड़ी के सामने पहुँच ही गया। आवाज लगाने पर वह रद्दी वाला बाहर आया, देखते ही भड़क गया और बोला-ईमानदार आदमी हूँ, गरीब हूँ तो क्या? रद्दी खरीदता हूँ, यही कहने आये हैं न कि रद्दी के साथ फलाना किमती सामान चला आया है। ऐसी बातों को कौन मानेगा? जाईए, पुलिस, कोर्ट कचहरी, मुझे कोई डर नहीं। नहीं भाई ऐसी बात नहीं है, मुझे आपका सहयोग चाहिए। मुझे आप से एक जरूरी काम है, बिल्कुल विनीत भाव से मैंने उसे कहा।

मुझे उस समय मुंशी प्रेमचन्द्र

की उक्ति जो उन्होंने गोबर से कहलवाई थी कि जिस पैर के अन्दर गर्दन दबी हो उसका तलवा सहलाना ही उचित है, का वास्तविक अर्थ समझ में आ रहा था। आगे मैंने कहा, उस दिन रद्दी के साथ मैंने एक पुस्तक भी बेच दी है, यदि आपके सहयोग से मुझे वह मिल जाता तो आपकी बड़ी मेहरबानी होती। थोड़ी बहुत ना-नुकूर एवं एक सौ रुपये इसके लिए देने की बात पर वह बोला, मैं आपको उस जगह ले जा सकता हूँ, जहाँ मैंने उक्त रद्दी बेची है। हाँ पुस्तक मिलेगा या नहीं इसकी गारंटी नहीं है। नहीं मिलने पर भी एक सौ रुपये देने ही होंगे। मैंने उसकी सभी शर्तें मान ली, क्योंकि और कोई चारा नहीं था।

थोड़ी ही देर में वह मुझे कर्कट से बने एक स्टोर के पास ले गया, जहाँ असमाजिक तत्वों, गंदगी का जमावड़ा था। स्टोर के कुछ लोगों से बातचीत करने पर उन्होंने कहा कि दो सौ रुपये देने पर वे पुस्तकें खोज सकते हैं। यहाँ भी उन्होंने रुपये अग्रिम में लेने और पुस्तक नहीं मिलने पर भी रुपये नहीं लौटाने की शर्त रखी। उन्हें क्या पता कि वह दो हजार भी मार्गेगे तो मैं तैयार हो जाऊँगा। मैंने उन्हें रुपये देकर जल्द से जल्द खोजने का आग्रह किया। वे मुझे रुपये लेने के बाद स्टोर के अन्दर ले गये, जहाँ तिथिवार पुस्तकें, अखबार आदि तरीके से रखे गए थे। ये लोग जितने असभ्य और उलझे हुए थे, स्टोर के अंदर की व्यवस्था उतनी ही सुलझी



हुई और उन्नत थी। उनके व्यवस्था का मैं कायल हो गया। थोड़ी बहुत मेहनत के बाद मैंने दूर से ही वह पुस्तक पहचान ली, जिसके लिए मेरा परिवार दो-तीन दिनों से बेचैन था। पुस्तक मिलने पर मुझे कितनी खुशी हुई, इसका आप अंदाजा नहीं लगा सकते। सबसे अधिक प्रसन्नता मेरे बेटे को हुई। घर का माहौल शांत हो गया। दिवाली की तैयारी जोर-शोर से होने लगी। हाँ, एक सबक जरूर मिला कि तब से मैं रद्दी कागज/सामान दिवाली के बाद और काफी सावधानी से बेचता हूँ।

दशहरा

विजयादशमी के दिन प्रत्येक वर्ष मेरे गाँव में लगभग एक घंटे रामलीला होती है, जिसमें राम और रावण के बीच संवाद होता है और अन्त में रावण का प्रतीकात्मक रूप में वध कर दिया जाता है और दशहरा धूमधाम से मनाया जाता है। अमूमन प्रत्येक गाँव, शहर, कस्बे में यह परम्परा वर्षों से चली आ रही है। रावण की भूमिका गाँव के ही एक सज्जन महोदय, जब से मैंने होश संभाला है, करते आ रहे हैं। लोग उन्हें, उनके नाम के बजाए रावण चाचा, रावण भईया ही कहते हैं और वे इसका बुरा भी नहीं मानते। वे एक नेक दिल इंसान हैं और बाहर कहीं सरकारी सेवा में हैं, लेकिन प्रत्येक दशहरा में रावण की भूमिका निभाने वे जरूर आते हैं। उनकी मजबूत कद-काठी, भारी आवाज,

रावण की भूमिका में जीवन्तता उत्पन्न कर देती है। राम की भूमिका गाँव के ही मुखिया महोदय निभाते हैं।

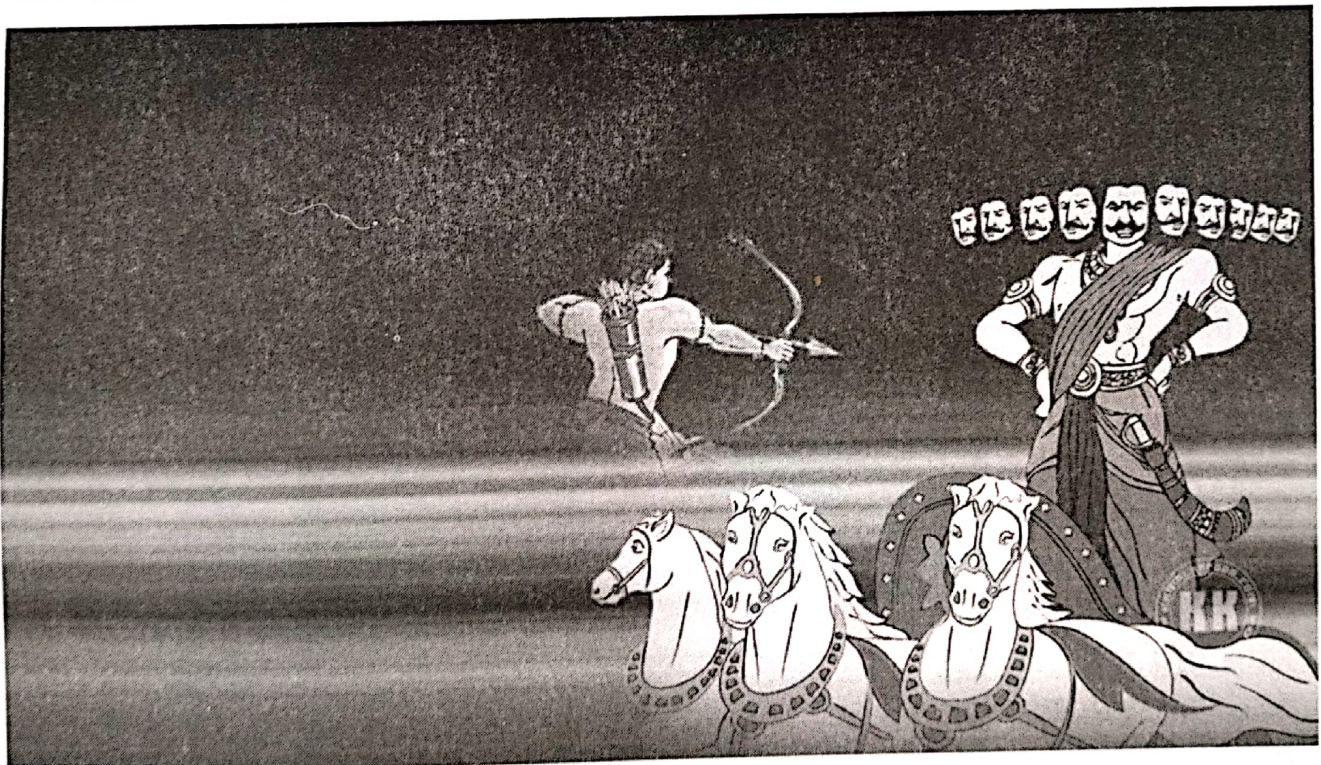
रामलीला की भूमिकाओं के उलट असल जीवन में दोनों का चरित्र उल्टा है। मुखिया महोदय ने हाल ही में नया घर बनवाया है, जिसका पानी रावण चाचा के जमीन में गिरता है। कई दौर की बैठकों/पंचायतों के बाद भी इसका समाधान नहीं हो पाया। लेकिन दशहरा के रामलीला पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और हरेक वर्ष की भाँति दोनों अपनी-अपनी भूमिकाओं के लिए तैयार हुए। दोनों ने साथ-साथ अभ्यास किया। उनकी लगन देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि उनमें कोई विवाद है। नियत दिन रामलीला शुरू हुई।

गाँव के सभी लोगों के साथ-साथ विधायक महोदय मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। रामलीला चल रहा था। लोग संवाद/दृश्य का आनंद लेते रहे और रावण चाचा की भूमिका की प्रशंसा करते नहीं थकते थे। आँखों में क्रोध, बुलन्द आवाज और जीवन्त संवाद। लेकिन आज कुछ विचित्रता है। लगभग सवा घंटा का समय समाप्त होने को चला है, परन्तु रामलीला समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही, क्योंकि रावण मर ही नहीं रहा है। लोगों को इंतजार है कि रावण मरे और रामलीला समाप्त हो, ताकि दशहरा का उत्सव मेला आदि जल्दी से जल्दी शुरू हो।

रामलीला के निर्देशक महोदय परेशान हो कर नेपथ्य में जाकर कहे, रावण अब तुम मरो! नाटक नहीं करो। विधायक महोदय मौजूद हैं, देर मत करो। रावण का संवाद दोगुनी आवाज में गुँजा - हा! हा! हा! रावण नहीं मरेगा, अन्याय रहते रावण नहीं मरेगा। गत्ते के बने चमकदार चन्द्रहास खड्ग को लहराते हुए रावण चाचा ने राम को जोर का धक्का देते हुए उक्त संवाद जोर से दुहराई। बड़े बुजुर्ग दबे जुबान से चर्चा करने लगे। घोर अनर्थ! क्या आज तक ऐसा हुआ है, क्या सचमुच कलियुग आ गया? अनहोनी की आशंका से दर्शक दीर्घा में एकदम शांति व्याप्त हो गई। संवाद के साथ-साथ रावण ने दोहराया, जबतक मेरे खेत में पानी गिराने का अन्याय

खतम नहीं होगा, रावण नहीं मरेगा। दर्शक दीर्घा में खलबली मच गई, अरे क्या! रावण सचमुच नहीं मरेगा। गणमान्य प्रतिष्ठित लोगों ने समस्या के सामाधान दो दिनों में करने का आश्वासन दिया, तब रावण मृत्यु को प्राप्त हुआ और लोगों ने राहत की सांस ली।

इतने दिनों के बाद जब भी इस घटना को याद करता हूँ, तो महसूस करता हूँ कि वास्तव में रावण कभी मरा ही नहीं हैं। जरा आप भी सोचिए भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, अन्याय, गरीबी के जिंदा रहते, इस माहौल में क्या रावण मरेगा? नहीं न! रावण नहीं मरेगा, नहीं मरेगा, रावण नहीं मरेगा।



■ ■ ■



सुश्री नायला समरीन,
पुत्री-मो० आफताब अंसारी,
वरीय लेखाकार।

ऋतुराज बसंत

कितने सुन्दर दृश्य दिखाता, जब आता ऋतुराज बसंत।
उपवन का उपवन खिल जाता, जब आता ऋतुराज बसंत॥

हम भी चलो बसंत मनायें, प्रकृति संग करें कमाल।
रंग-बिरंगी उड़ी पतंगें, लाल और पीले उड़े गुलाल॥

मन की लय पर तन मुस्काता, जब आता ऋतुराज बसंत।
कितने सुन्दर दृश्य दिखाता, जब आता ऋतुराज बसंत॥

कली-कली की हँसी छूटी तो, बन जाता फूलों का अंग।
फुर्-फुर् तितली गुन-गुन भौरे, लगे खेलने उनके संग॥

पुष्प-पराग शहद छलकाता, जब आता ऋतुराज बसंत।
कली-कली भौरे मंडराते, जब आता ऋतुराज बसंत॥

सुबह-शाम कोयल डाली पर, मनमोहक गीत सुनाती।
वन-उपवन मधुवन बन जाता, पाती-पाती रागिनी॥

कितने सुन्दर दृश्य दिखाता, जब आता ऋतुराज बसंत।
उपवन का उपवन खिल जाता, जब आता ऋतुराज बसंत॥





राजेन्द्र कुमार,
पर्यवेक्षक/हिन्दी कक्ष

समय और सांसें

समय और सांसें प्रत्येक जीव के लिए निर्धारित है। ये एक-एक बूँद पानी की तरह टपकती हैं और अन्तरिक्ष में विलीन होती जाती हैं। बीता हुआ पल और निकली हुई सांसें इस जीवन में वापस लौट कर नहीं आती। मानव जीवन को मिली ये सांसें और समय का यदि केवल सदुपयोग किया जाये, तो न जाने क्षणभर में ये दुनिया कहाँ-से-कहाँ पहुँच जाये। सदा के लिए इस धरती पर शांति, अनंत और असीम साम्राज्य स्थापित हो जाय।

यह मानव शरीर ईश्वर का दिया हुआ सर्वोत्तम उपहार है, जिसे उच्च उद्देश्यों की पूर्ति के लिए रचा गया है। ईश्वर चाहता है कि मेरे जैसी ही सत्ता धरती पर कायम हो, लेकिन कुछ अहम और स्वार्थ प्रदत्त इंसानों के कारण ही ईश्वर की इच्छा पूरी नहीं हो पाती है।

यह मानव की कमजोरी है कि वह हमेशा अपने आपको दूसरों से बढ़कर सिद्ध करने की कोशिश में दिन-रात लगा रहता है, जबकि वह स्वयं अपनी सद्बुद्धि और सत्य के बल पर कुछ भी करने के लिए सक्षम है, क्योंकि आत्म गौरव की बात निराली है। आत्म अनुशासन से इस धरती पर कुछ भी और कोई भी कार्य करना असम्भव नहीं है। इंसान जो चाहे अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से प्राप्त कर सकता है, बस इसके लिए समय के हर क्षण का सदुपयोग किया जाये।

आज का अधिकांश मानव अकर्मण्यता के दल-दल में फँस कर डूब मरने और अपने साहस का प्रदर्शन करने में ही अपनी शान समझता है। इसका प्रतिफल क्या होगा समझ नहीं पाता, जबकि प्रतिफल हमेशा पीड़ा का ही कारण बनता है।

जीवन के दौड़ में जिन्दगी की धारा का चुनाव करना अपने हाथ में है। धारा की ओर बहने में सार्थकता नहीं है, उसके विपरीत/विरोध में यदि चला जाये तो हमें संघर्ष करना पड़ेगा, जो जीवन को शक्ति प्रदान करेगा और संघर्ष करते-करते हम वहाँ पहुँच पाने में सफल होंगे, जहाँ से धारा बह रही है तथा मंजिल पर पहुँचकर हम धारा की दिशा को जिधर चाहें, मोड़ सकते हैं। यह पूर्णतः आपकी इच्छा सकती पर निर्भर करता है कि वह कितनी बलवती है।

हम छाया को जितनी तेजी से पकड़ने की कोशिश करते हैं, वह उतनी ही तेजी से भागती जाती है, कभी पकड़ में नहीं आती। ठीक उसी प्रकार मनोरथ पूरा होने पर हमारा मन छाया की तरह ही अगले मनोरथ की पूर्ति के लिए भागता फिरता है, कभी तृप्त नहीं होता। जीवन गुजर जाता है और जब वह अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव पर जाने को होता है तब उसे महसूस होता है कि हम अपने जीवन के बहुमूल्य समय

को व्यर्थ ही बर्बाद कर दिये और सोचते-सोचते खाली हाथ विदा होने की घड़ी आ जाती है।

यदि हम अपने से अधिक संपन्न व्यक्ति पर दृष्टि डालते हैं तो हमें कष्ट होता है और अपनी स्थिति बहुत ही कमजोर दिखती है। ठीक इसके विपरीत जब हम अपने से निर्धन या नीचे तबके के लोगों को देखते हैं, तो लगता है कि सबसे सुखी आदमी मैं ही हूँ। ऐसी परिस्थिति में जब भी आपको किसी प्रकार का कष्ट महसूस हो या विपत्ति आये तो सदा अपने से नीचे के स्तर के व्यक्तियों पर नजर डालें, सदा सुखी रहेंगे।

मन कस्तूरी के मृग की तरह जहाँ-तहाँ न भटकता रहे, इसके लिए आवश्यक है कि अपनी नाभि में अवस्थित कस्तूरी के ज्ञान का अनुशरण करें और अन्तरात्मा की प्रेरणा का अनुशरण करते हुए जीवन की आदर्शवादिता को अपनाया जाये। जिस प्रकार तालाब में पत्थर फेंकने पर उसमें उठी तरंगें तालाब की हर दिशा को प्रभावित करती हैं, उसी प्रकार मानव अपने भ्रष्ट आचरण/कर्मों से सम्पूर्ण अदृश्य जगत को प्रभावित करता है। तो फिर क्यों न हम सत्य धर्म का पालन करते हुए अपने स्वच्छ एवं कल्याणकारी आचरण से सम्पूर्ण जगत को प्रभावित करें और जीवन से जब चाहें तब मुक्ति पायें। जैसा कि स्वामी विवेकानंद तथा अन्य महापुरुषों ने अपने प्रभावपूर्ण आचरण से सत्कर्मों

एवं सन्मार्गों पर चलने हेतु सम्पूर्ण जगत को प्रभावित किया। ईश्वर ने मानव को इतनी क्षमता दी है और इतना सम्पन्न बनाया है कि वह स्वयं सुख-शान्ति से रह सके और जलते दीपक की तरह अपने प्रभाव से औरों को प्रकाशित कर सके।

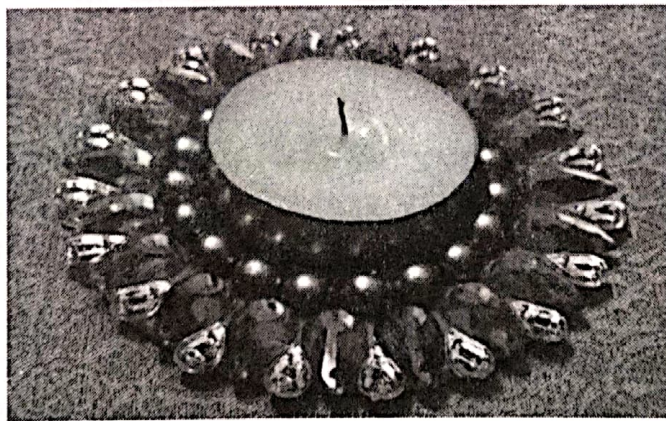
दीपक में जितना तेल भरा जाएगा उसी के अनुसार उसकी सांसें एवं जलने का समय निर्धारित होगा। ठीक उसी प्रकार किसी जीव की सांसें और समय उसके कर्मों/सत्कर्मों के आधार पर ईश्वर उसके नये जीवन के लिए निर्धारित करता है, क्योंकि कोई बच्चा जब जन्म लेता है, तो जन्म लेते ही उसे करोड़ों-अरबों की सम्पत्ति विरासत में मिल जाती है और किसी नवजात शिशु को जन्म लेने के पश्चात् घर में खाने के भी लाले पड़ जाते हैं, यहाँ तक की उसे पीने के लिए दूध भी ठीक से नसीब नहीं होता।

अतः दीपक की लौ की तरह, जो स्वयं तो जलता है, कष्ट उठाता है और जब बुझने का समय आता है तो अन्तिम प्रकाश इतना जोर से बिखेरता है कि लगता है अन्तिम संदेश देते हुए वह कह रहा हो कि हे चमन वालों! अब मैं जा रहा हूँ, तुम सभी आनंदमय और सुखी रहना और मेरी तरह समय के साथ चलकर/जलकर तुम भी जाते समय अन्त में अपना संदेश प्रकाश के रूप में देते जाना और कहना कि अब तो मैं जा रहा हूँ, दीपक की तरह जलते हुए तुम भी अपना प्रकाश/संदेश

देते रहना, जब तक तुम्हारे जीवन की अन्तिम सांसें बुझ न जायें। याद रखें दूसरों को प्रकाश देने में दीपक की तरह मानव को खुद जलना होगा, जलने में कष्ट होगा, जैसा कि दीपक जलकर स्वयं गर्म हो जाता है।

नोट:- आपने देखा होगा,

दीपक को अन्तिम प्रकाश फैलाते समय उतना ही कष्ट होता है, जितना की मानव को अपने शरीर में रहकर अन्तिम सांस छोड़ते समय। दोनों में कितनी समानता है, यह एक विचारणीय बिन्दु है।



■ ■ ■

उत्प्रेरक विचार

श्रीमती लगनी देवी,
पत्नी-श्री राम अनुग्रह राय, सेवक, कैटीन।



- जब तुम पैदा हुए तो तुम रोए, जबकि पूरी दुनिया ने जश्न मनाया लेकिन अब तुम अपना जीवन ऐसे जियो कि तुम्हारी मौत पर पूरी दुनिया रोए और तुम जश्न मनाओ।
- हमें एक दूसरे के लिए दया का भाव रखना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि अपनी कमाई का कुछ भाग गरीबों में बाँटें।
- आत्म अनुशासन उच्च सफलता और अर्थपूर्ण जीवन की सुनहरी कड़ी है।
- अगर भारत को स्वच्छ बनाना है, तो पहले एक झाड़ू उठाइए और किसी दूसरे का घर साफ करने में लग जायें, लोग आपके पीछे चल चढ़ेंगे।
- जीवन की सबसे दुःखद घटना जीवन के सबसे बेहतरीन अवसरों का रास्ता खोलती है। बदकिस्मती में खुशनुमा बदलाव के अद्भुत अवसर छिपे होते हैं।
- जागने के बाद के 30 मिनट में आप सिर्फ पवित्र विचारों को मन में लायें और सर्वोत्तम कार्य करें, तो आपका दिन शानदार शुरुआत के साथ अनेक सर्वश्रेष्ठ अवसरों को लेकर आएगा।
- अपने आपको पुर्नजीवित एवं अर्न्तमन को पोषित करने के लिए कुछ समय शान्ति के लिए रखिए।
- चिंता और चिन्ता में बहुत समानता है। एक मृतक को जलाती है और दूसरी जीवित को।
- अपने शरीर को मंदिर की तरह पवित्र समझना चाहिए। प्राणायाम और व्यायाम न सिर्फ आपकी उम्र को जीवन से जोड़ देता है, बल्कि आपके जीवन में उम्र जोड़ देता है।
- एकान्त का अनुभव, आपको अपना ध्यान अपने जीवन की प्रधानताओं पर केन्द्रित करने में सहायक का कार्य करता है।
- प्रातः उठने की आदत आपको प्रभावशाली लोगों की उच्च श्रेणी में शामिल कर सकता है। जैसे - महात्मा गांधी, थॉमस एडिसन और नेल्सन मंडेला आदि इसके उदाहरण हैं।
- अपनी परेशानियों को एक आशीर्वाद के रूप में समझना चाहिए। अपने लड़खड़ाते कदमों को अपना पहला कदम समझिए और वचनबद्ध हो जाइए कि अपने चोटों को ज्ञान के रूप में बदल देंगे।

■ ■ ■



निभा कुमारी

पुत्री-श्री अनिल कुमार सिंह
सहायक लेखा अधिकारी।

वीर जवान मोदी जी

देखो भारत माँ के बेटों ने ये कैसा कमाल दिखाया,
घुस घर में ही, उनके बकरोँ को हलाल किया।

पहली बार भारतवंशी होने पर अभिमान हुआ,
पहली बार हमको भी अपनी शक्ति का एहसास हुआ।

धन्य-धन्य भारत की सेना धन्य आज सरकार हुई,
जय की घोषणा से, पाक सेना चकनाचूर हुई।

भारत माँ ने शौर्य जगाया आज सोये मोदी में,
सागर सा हिम्मत भर डाला अपने बेटे मोदी में।

बहुत हो गया, बेटा बोला, मौन नहीं अब धारेंगे,
तूने छिपकर मारा मुझको, घर में घुसकर मारेंगे।

देख पाक तू भारतवासी, नहीं हारने वाले हैं,
अठारह के बदले तेरे, अड़तीस मारने वाले हैं।

अब इतनी जहरखुरानी नहीं चलेगी, नहीं चलेगी,
भारत में अब दाल तुम्हारी नहीं गलेगी, नहीं गलेगी।

भारत ने जितनी भूल की उसे सुधारा जाएगा,
बिना शहादत के वह गद्दार अब तो मारा जाएगा।

मोदी तुमने लाज बचा ली, कितने ही बलिदानों की,
देश बधाई देता तुझको, तुम ताकत हो अरमानों की।

■ ■ ■





शहर के सबसे बड़े इंजीनियरिंग महाविद्यालय में दिक्षांत समारोह के वजह से काफी चहल-पहल थी। सजावट ऐसी, मानों किसी की शादी हो। छात्रों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी आये थे। अपने बेटे-बेटियों को इंजीनियर बनाते हुए देखना उनके जीवन के सबसे सुखद लम्हों में से एक था। कृतिका को आज पूरे विश्वविद्यालय में अव्वल आने की वजह से स्वर्ण पदक भी मिलने वाला था। गरीब घर की बेटी होने के बावजूद भी उसने छात्रवृत्ति से पढ़ाई कर अपने स्वयं की मेहनत से इतने बड़े कॉलेज में अव्वल आकर वाकई कमाल का काम की थी।

महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर सुरक्षा कर्मियों ने किसी एक व्यक्ति को भिखारी समझकर रोक रखा था। देखने में वह कमजोर, सफेद कुर्ता पहने जो उसके डील-डौल के हिसाब से काफी बड़ा था। ढीला पायजामा, फीके रंग के जूते, जो जगह-जगह से सीले हुए थे। आगन्तुक अपनी बेटी का नाम बताकर अन्दर आने की गुहार कर रहा था, पर सुरक्षाकर्मी उसे अन्दर आने नहीं दे रहा था। आगन्तुक के जिद के कारण मुख्य द्वार पर शोरगुल होने लगा, जिसे सुनकर समारोह के

व्यवस्थापक भी वहाँ आ गया।

व्यवस्थापक - क्या हो रहा है यहाँ पर ?

सुरक्षाकर्मी - सर! ये बूढ़ा अन्दर आने की जिद कर रहा है। हमने रोका तो वह मानने को तैयार नहीं है और कहता है कि उसकी बेटी यहाँ पढ़ती है। आज के दिक्षांत समारोह में वह अपनी बेटी को देखने आया है, लेकिन शोरगुल के बीच में सुरक्षाकर्मी की आवाज दबकर रह गई।

व्यवस्थापक - क्या है जी! क्या काम है अन्दर ? किससे मिलना है ?

आगन्तुक - मैं अपनी बेटी से मिलने आया हूँ, वह यहाँ पढ़ती है। उसने आज हमें यहाँ बुलाई है। समारोह होने वाला है, बोली थी कि पापा जरूर आना।

व्यवस्थापक को विश्वास ही नहीं हुआ आगन्तुक की बातों पर, उल्टे व्यवस्थापक ने झिड़कते हुए उसे जाने को कहा और कहा कि अगर यहाँ से नहीं जाओगे तो मार पड़ेगी।

व्यवस्थापक की बात से दरवान को और बल मिला, उसने घसीटते हुए उसे बाहर कर दिया। आगन्तुक भी खामोश होकर अलग हट गया, फिर जब विद्यालय के सभी कर्मचारी अपने-अपने कामों में व्यस्त हो गये,

तो वह थोड़ी देर के बाद वह सुरक्षाकर्मियों की नजर से बचते हुए चुपके से अन्दर चला गया। आगंतुक फटेहाल अवस्था में कबतक बच सकता था ?

थोड़ी देर के बाद किसी ने व्यवस्थापक को बताया कि कोई अजनबी कैम्पस में घुस आया है। वेश-भूषा से वह बाहरी आदमी दिखता है। व्यवस्थापक और प्राचार्य ने दरवान को आदेश दिया कि इसे तत्काल बाहर करो। वो हाथ जोड़कर गुहार लगाता रहा कि मैं चोर/बदमाश नहीं हूँ साहब! मैं तो यहाँ अपनी.....। शोरगुल के बीच में उसकी आवाज पुनः दब कर रह गई। भीड़ जमा हो गई। व्यवस्थापक ने सुरक्षाकर्मियों से कहा कि इसे पुलिस के हवाले कर दो, अब ये नहीं सुनने वाला है। जो करना होगा, पुलिस करेगी।

इसी बीच उसकी बेटी की नजर उसपर पड़ गई, जो भीड़ को चीरते दौड़ती हुई वहाँ पर आई और अपने पापा को देखकर उसके गले से लिपटकर रोने लगी। वेदना भरी स्वरों में वह बोली - क्या हुआ पापा! यह वह लड़की थी, जिसे दिक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक से विभूषित किया जाना था।

जब भीड़ को मालूम हुआ कि वह बूढ़ा कोई और नहीं, स्वर्ण से विभूषित होने वाली लड़की कृतिका का पिता है, तो सभी ठिठक कर रह गये। वे मजदूरी करके अपने तीन बेटियों को

पढ़ा रहे थे, जिसमें कृतिका सबसे बड़ी थी। बच्चों को पढ़ाने के चलते उनके पास पहनने के लिए न तो पैर में जूता-चप्पल था और न ही एक अच्छी कमीज। आज बेटी को सम्मान मिलना था, इसी वजह से वे अपने पड़ोसी से शर्ट-पैंट माँगकर पहने हुए समारोह में भाग लेने आये थे, जिसे सुरक्षाकर्मियों के साथ-साथ व्यवस्थापक ने भी उनको चोर समझ लिया था।

बेटी को समीप पाकर पापा की आँखों से अश्रुधारा बह चली और कहने लगे अपनी बेटी से - बेटा इन्हें समझाओ, ये लोग मुझे चोर समझते हैं। इन्हें बताओ कि मैं चोर-बदमाश नहीं हूँ।

कृतिका ने अपने पापा को खड़ा होने में मदद करते हुए भीड़ से पूछा - क्या चुराया है मेरे पापा ने ?

व्यवस्थापक ने कहा - ऐसे कपड़ों में कौन आता है ऐसी जगहों पर ? इनका वेश-भूषा ही ऐसा था कि.....।

व्यवस्थापक के व्यवहार से कृतिका की आँखों में गुस्सा तो था ही, वह कुछ न बोली, चुपचाप अपने पापा से चिपककर कपसती हुई बोली, चलो पापा! अब हम घर चलते हैं। यहाँ अब हमें सम्मान नहीं लेना!

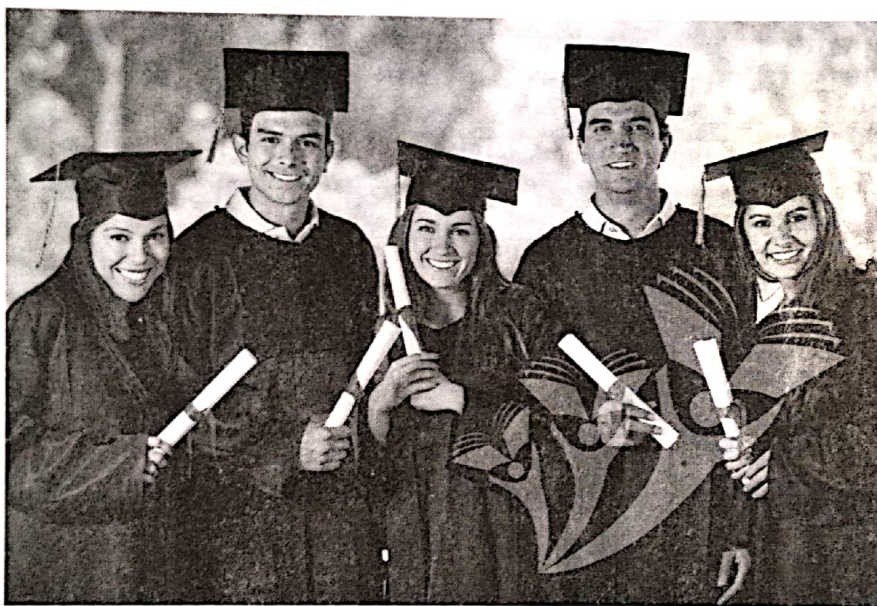
नहीं बेटी! तुम्हें पुरस्कार के रूप में सम्मान मिलना है न! तुम्हारी पढ़ाई का पुरस्कार है, इसे तुम लेकर ही आना। अब मैं चलता हूँ बेटी! मेरे जैसों का यहाँ क्या काम ?

कृतिका - मुझे ऐसे लोगों के हाथों से सम्मान नहीं लेना, जो इंसान का कद्र करना नहीं जानते, उनके शक्ल-सूरत और पहनावों से उसके आचरण का पैमाना समझते हैं। महज कपड़ों को आधार मानकर उसके अच्छा-बुरा का प्रमाण दे देते हैं। शर्मिन्दगी हो रही है मुझे कि जिसने अपनी जरूरतों का सौदा कर मुझे आज काबिल बनाया, उस भगवान को इन लोगों ने तिरस्कार किया। ऐसे हाथों से हमें सम्मान नहीं लेना।

कृतिका ने अपने आँसुओं को

अपनी आँखों में समेटते हुए सधी आवाज में कही - जिन्होंने मुझे सिखाया कि कर्म ही प्रधान है, आज वो खुद ही अपनी शिक्षा भूल गये। मैं अपनी उपाधि बाद में आकर ले लूँगी, अब हमें आज यहाँ एक पल भी नहीं रुकना।

व्यवस्थापक, प्राचार्य, सुरक्षाकर्मी और कुछ प्रोफेसर, अन्य अभिभावकों के साथ शर्मिन्दगी से सर झुकाये खड़े थे और कृतिका अपने पापा को सम्भालते हुए मुख्य द्वारा से बाहर निकल गई।



■ ■ ■



श्रीमती निलम सिंह
पत्नी-श्री अनिल कुमार सिंह
सहायक लेखा अधिकारी।

अपनी राजनीति का खेल

आओ चलो खेलें राजनीति का खेल।
किसी के विचारों में हम डालें ऐसा तेल,
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।
किसी का हो दीया, किसी की हो बाती,
किसी से लेकर उधार, डालें हम दीया में तेल।
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।
किसी की हो खेती, किसी की हो जोती,
चलो हम चरायें उसमें अपनी गाय, भैंस और बैल।
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।
किसी की हो हानि, किसी का गिरे पानी,
किसी के विचारों में हम डालें ऐसा तेल,
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।
किसी की उजड़े बेटी, किसी का बिगड़े खेती,
किसी का हो इज्जत नीलाम, किसी का जीना हराम,
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।
भविष्य किसी का हो बर्बाद, घर किसी का हो आबाद,
सही हो अपना माली, हाल ऐसा ही करें हम मेल,
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।
लहू किसी का हो बर्बाद, हिन्दू हो या मुसलमान,
दिन दिवाली रात को होली, चलो हम खेलें ऐसा खेल,
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।
मन्दिर-मस्जिद वोट दिलाता, जात-पात शोहरत का खेल
गठबंधन जो भीड़ जुटाता, शासन अपनी संतानों का खेल।
आओ चलो खेलें हम राजनीति का खेल।

■ ■ ■

इंटरनेट से लाभ या हानि

सलाउद्दीन अंसारी
स० ले० अ०



जिस प्रकार देश में फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए 'हरित क्रांति' आई थी, दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र को बढ़ाने के लिए 'श्वेत क्रांति' चलाई गयी, उसी प्रकार इस सदी में जिस प्रकार से इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है, तो ऐसा लगता है, मानो वर्तमान समय 'इंटरनेट क्रांति' का है, क्योंकि इसके क्षेत्र में नित नये आविष्कार और सुविधाएँ जिस गति से हो रही हैं, इसका विकास सुदूर क्षेत्रों तक भी हो जाएगा। इसके अलावा 3G और 4G जैसी सुविधाएँ भी इस क्षेत्र में क्रांति का आभास कराती हैं।

इंटरनेट या विश्व अंतरजाल विज्ञान की ऐसी उपलब्धि है, जिसने सूचना तकनीकी के क्षेत्र में असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिये। इंटरनेट की संकल्पना ने "गागर में सागर" को चरितार्थ कर दिया है। ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, सूचना, मनोरंजन और विविध विषयों पर विस्तृत तथ्य क्षण मात्र में नजरों के सामने उपस्थित हो जाते हैं। अस्सी के दशक से आकार लेता नब्बे की दशक के मध्य तक आते-आते इस तकनीक ने सूचना तकनीकी के पटल पर अनेक अभिनव आयामों को स्थापित कर दिया। मानवीय कल्पनाओं को नई

ऊँचाईयों पर ले जाता इंटरनेट आज समाज के एक बड़े वर्ग के दैनिक जीवन का अविभाज्य और अनिवार्य अंग बन गया है।

विश्व अंतरजाल पर घटित होने वाली गतिविधियों ने आधुनिक विश्व समुदाय में एक नवीन सांस्कृतिक चेतना का संचार किया है। जिस प्रकार किसी भी विचारधारा या उपलब्धि के अनेक आयाम होते हैं, उसी तरह इंटरनेट के भी धनात्मक और ऋणात्मक आयाम हैं। इसमें कोई मतभेद नहीं हो सकता कि इस तकनीक के आविर्भाव और चरणबद्ध विकास के साथ-साथ विश्व समुदाय में अनेक स्तरों पर बौद्धिक सामग्रियों का विनिमय अत्यंत सहज एवं सुगम हो गया। वैचारिक और व्यापारिक दोनों ही स्तरों पर आदान-प्रदान की प्रक्रिया ने एक ऐसी सामाजिक चेतना का विकास किया, जिसने सात समंदर की दूरियों को पाट कर "दुनिया को मुट्ठी" में कर लेने के स्वप्न को साकार कर दिया।

इंटरनेट का रचनात्मक पक्ष मानव समाज के बौद्धिक एवं नैतिक स्तरों पर उत्थान का पर्याय बनता जा रहा है, परन्तु नकारात्मक और विकृत मानसिकता के पोषक तत्वों द्वारा इस

माध्यम का दुरुपयोग भी बढ़ता जा रहा है। पत्र पत्रकारिता हो या अश्लीलता को परोसती साइटें, हैकिंग के दुष्परिणाम हों या गोपनीय सूचनाओं की चोरी, इन सब गतिविधियों ने अंतरजाल के जाल में प्रयोगकर्ताओं को उलझा कर रख दिया है। इंटरनेट पर व्यावसायिक लेन-देन के प्रकरणों में जालसाजी और धोखाधड़ी के मामलों ने ग्राहकों और सेवा प्रदाताओं दोनों को ही सशंकित और सावधान कर दिया है। पोर्न वीडियो और पाठ्य सामग्री की सहज एवं सुलभ उपलब्धता ने सांस्कृतिक प्रदूषण की हदों को पार कर दिया है, जिसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव बाल, किशोर एवं युवा मानसिकता पर दृष्टिगोचर हो रहा है। नग्नता और उन्मुक्त यौन संबंधों की वकालत करते साइट्स समाज की नैतिक अभिधारणाओं पर प्रहार कर रहे हैं। इस समस्या के प्रति हमें जागरूक होना पड़ेगा, अन्यथा संबंधों की मर्यादा, आबरू, इज्जत जैसे शब्दों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। इंटरनेट सर्फिंग की लत के शिकार युवा चैटिंग, फेसबुक सरीखे सोशल मीडिया के अनुप्रयोग से नकारात्मकता का ग्रास भी बनते जा रहे हैं, जिसका परिणाम अनेक युवाओं द्वारा किये जा रहे आत्महत्याओं के

रूप में सामने आया है।

असीमित संभावनाओं को अपने गर्भ में छिपाए इस संचार एवं सूचना तकनीक का सकारात्मकता तथा सृजनात्मकता से परिपूर्ण अनुप्रयोग सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व बन गया है। अभिभावकों को जागरूकता का परिचय देना पड़ेगा और बच्चों को इसके कुप्रभाव से बचाने के लिए साकांक्ष होना पड़ेगा। समय की मांग है कि अंतरजाल पर घटित हो रही अवांछित गतिविधियों पर यथाशीघ्र अंकुश लगाया जाये और इसके दुष्प्रयोग को रोकने के लिए कठोर वैधानिक प्रावधान लाए जायें। भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह आवश्यक है कि इंटरनेट की सुविधा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों तक शीघ्रता से हो और ई-गवर्नेंस की संकल्पना को मजबूत आधार मिल सके। यदि इंटरनेट सेवा के स्याह पक्ष को उपयोगकर्ता अपनी सकारात्मक और रचनात्मक सोच से दूर कर सके तथा भविष्य की पीढ़ियों के लिये विज्ञान के इस वरदान को विभिन्न सार्थक उपादानों से सुसज्जित कर सकें तो निश्चित रूप से भविष्य को वैश्विक समाज प्रगति के नए आयामों को स्थापित करेगा।





मो० आफताब अंसारी
वरीय लेखाकार।

रिश्तों का बाजार

रिश्तों का बाजार मिलेगा,
जो चाहो किरदार मिलेगा।

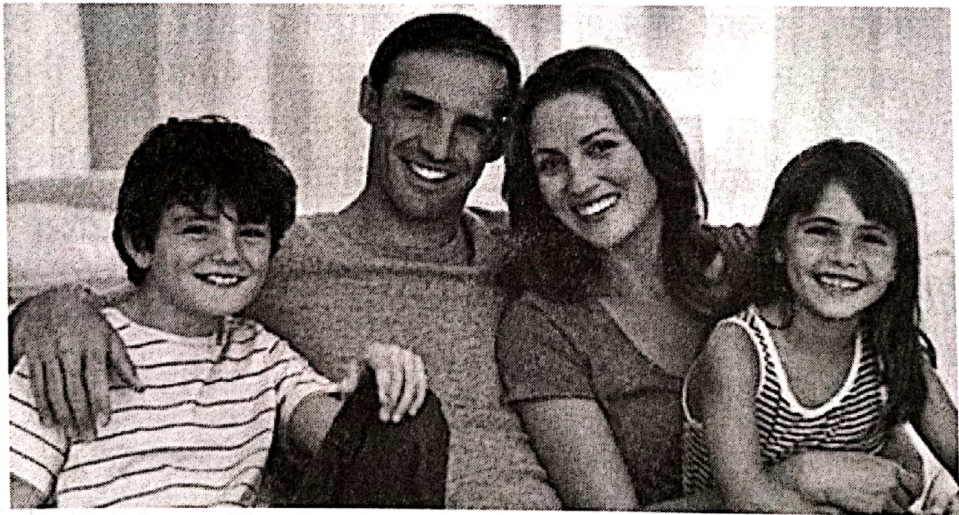
सुख में तेरा साथ रहेगा,
और दुःख में बाजार मिलेगा।

मजबूरी में चाहत होगी,
मजबूरी में प्यार मिलेगा।

प्यार में पहले मर जाओगे,
तब जाकर इजहार मिलेगा।

नफरत खून खराबा दंगा,
तुमको यह संसार मिलेगा।

सच्चाई का सौदा होगा,
और झूठा अखबार मिलेगा।



■ ■ ■



सत्येन्द्र माँझी
एम0वी0एस0

नौ कन्यार्ये

बड़े ही सौभाग्य की बात है कि आज घर में नौ कन्यार्ये पधारी हैं। उनका रुतवा ही अलग है। वे हमारे पड़ोसी के यहाँ से भरपेट खीर-पूड़ी खाकर आई हैं और अब मेरे घर की बारी है। मैंने भी उनके लिए बहुत ही स्वादिष्ट भोजन बनाया है, लेकिन उन सबों ने मेरे यहाँ खाने से इन्कार कर दिया है।

करें भी तो क्या करें। सुबह से ही कन्यार्ये कई जगह कन्या-भोज करके जो आ रही हैं। इसलिए स्वादिष्ट भोजन भी उन्हें प्रिय नहीं लग रहा है। दुर्गा के बाल रूप में वही कन्यार्ये हैं, जो हमारे सामने झुगगी-झोपड़ी में कई सालों से रहती आ रही हैं। इनके माता-पिता सुबह में काम की तलाश में निकलते हैं, ताकि शाम को अपने बच्चों का पेट भर सकें। ये छोटी-छोटी कन्यार्ये

सुबह उठकर घर का सारा काम करती हैं, साथ ही अपने छोटे-छोटे भाई-बहनों को भी संभालती हैं। आम तौर पर हम उन्हें अपने मन में बेचारी शब्द का प्रयोग करते हुए आगे बढ़ जाते हैं और भोजन तो क्या पानी के लिए भी हम नहीं पूछते।

तो आज क्या हुआ है? सिर्फ एक दिन हम उनकी पूजा करते हैं और मान-सम्मान देकर उन्हें भरपेट भोजन क्यों कराते हैं? एक दिन से क्या उनका भविष्य सुधर जाएगा? नहीं न!

आइए हम सभी मिलकर (प्रत्येक संपन्न परिवार) उन गरीबों की एक-एक कन्या के भविष्य बनाने की जिम्मेवारी लेकर उनकी सहायता करें, जिससे उन्हें किसी की दया का पात्र नहीं बनना पड़ेगा और न ही उनका बचपन बर्बाद होगा।



■ ■ ■

अकरम-बकरम बम्बे बोल

भारती, कक्षा-4
पुत्री-श्री संतोष कुमार सिंह,
लेखाकार



अकरम-बकरम बम्बे बोल,
नाप तोल कर फिर तू बोल।
कर्कश वाणी दिलको चुभती,
सुनने में कड़वी भी लगती।

अकरम-बकरम बम्बे बोल,
मार-पीट में खूब है झोल।
मिल-जुलकर खेलो तुम भाई,
वैर-भाव से बड़े लड़ाई।

अकरम-बकरम बम्बे बोल,
सच्चाई का बड़ा है मोल।
उधार नहीं किसी से लेना,
झूठ का साथ कभी न देना।

अकरम-बकरम बम्बे बोल,
साफ-सफाई का बड़ा है मोल।
बीमारी से बचकर रहना,
बलशाली बन आगे बढ़ना।

अकरम-बकरम बम्बे बोल,
अपने मन का राज तू खोल।
दादा-दादी के संग रहना,
बड़े-बूढ़ों का कहना मानना।

■ ■ ■





श्रीमती लगनी देवी
पत्नी-श्री राम अनुग्रह राय,
सेवक, कैटीन।

कर्म

कर्म ही पूजा है, यह सभी जानते हैं, लेकिन कर्म की साधना करने से परहेज करते हैं। कर्म करने से पहले अपने फायदे की तलाश करते हैं। बिना फायदा दिखे कर्म करने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं रहती है। सरकारी दफ्तर में कार्य करने वाले बाबू यही कहा करते हैं कि वेतन बहुत कम मिल रहा है या जितना बढ़ना चाहिए था, नहीं बढ़ा। वे इस बात को भूल जाते हैं कि हम जितना वेतन पा रहे हैं, उतना कार्य कर भी रहे हैं या नहीं। यदि प्रत्येक इंसान खुद के द्वारा किए जा रहे कार्यों की तुलना में अपने वेतन को देखे, तो उसे संतुष्टि ही होगी।

यदि हम फल की चिन्ता करते हुए कर्म करेंगे, तो कर्म करने की आधी क्षमता फल में ही समाहित हो जाएगी। इस संदर्भ में गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है:

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

(अध्याय-2/47)

कर्म करने से पहले कभी न सोचें कि परिणाम क्या होगा? अपनी पूर्ण इच्छा शक्ति से कर्म करते जायें,

जिसमें सत्य रूपी मिश्री का घोल मिला हुआ हो, तो उसके परिणाम तक पहुँचने में जब कभी भी बाधा आएगी, ईश्वर आपकी मदद किसी-न-किसी रूप में देवदूत बनकर अवश्य ही करेंगे। जरूरत है खेतिहर किसान की तरह अपने कर्म साधना में निरंतर लगे रहने की।

आज इस धरती पर वैसे व्यक्ति की तलाश करें, जो सत्य और कर्म का पुजारी हो और उनकी आपको जरूरत हो। कितने मिलेंगे, नहीं के बराबर न! और इस तरह के व्यक्ति हैं भी तो आपको विश्वास ही नहीं होगा कि अमुक व्यक्ति वैसा होगा जैसा हम खोज रहे हैं। हो सकता है कि आपको इस तरह के व्यक्ति न भी मिले। मिलने के क्रम में अधिकतर लोग यही कहा करते हैं कि “झूठ बोले बिना काम नहीं चलता।”

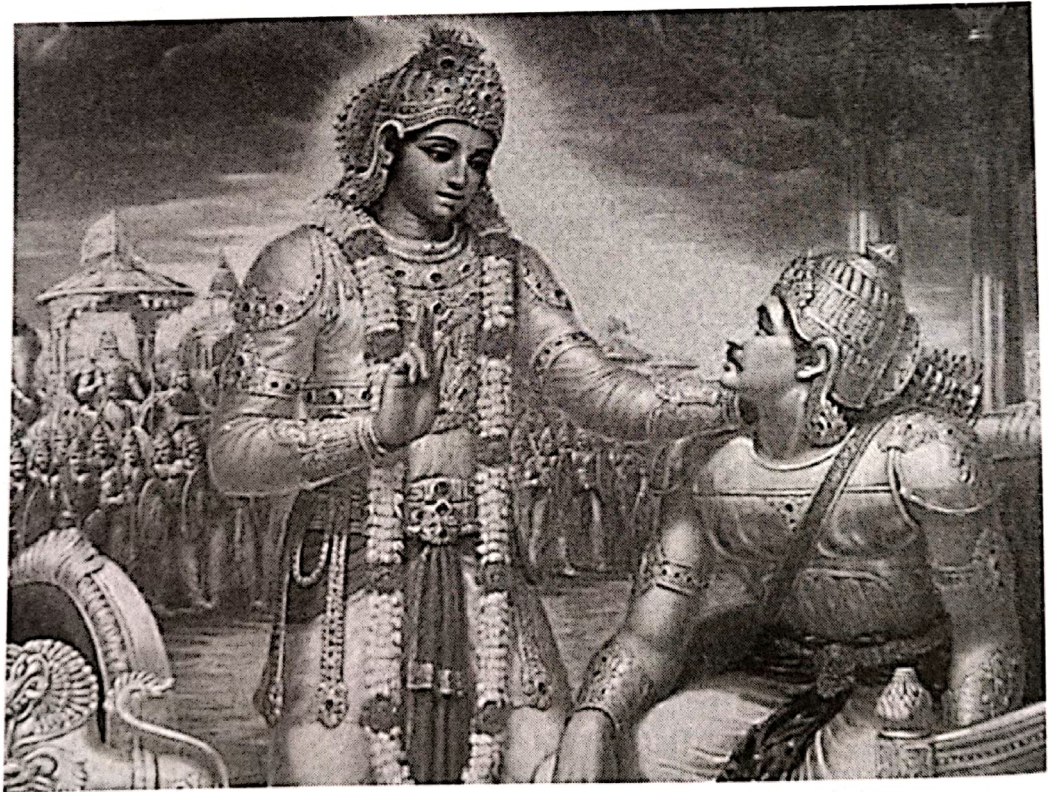
ऐसी बात नहीं है। इंसान तत्काल फायदा देखता है, इसलिए वह झूठ बोलता है। अगर इंसान कोई भी कर्म करने में अपना स्वार्थ छोड़ दे, जिसकी आवश्यकता नहीं है, तो झूठ बोलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। मान लिया जाये कि आप झूठ बोलें और कुछ पैसा कमाकर महल खड़ा कर लें, और आपके बच्चे वैसा नहीं कर पायें जैसा आप चाहते थे, तो वैसा महल किस काम का? महल न हो

और बच्चे आई०ए०एस० या डॉक्टर-ईंजिनियर बन जायें तो जीवन में शांति मिलेगी और आप अमन-चैन से रह पायेंगे, क्योंकि सबसे बड़ा महल है आपका यह शरीर, जिसे नुकसान/बर्बाद कर कोई भी संपत्ति आप प्राप्त नहीं करना चाहेंगे। इस शरीर को ईश्वर ने बड़े ही यतन से, प्यार से आपके लिए गढ़ा/बनाया है।

आपके चार बच्चे हैं और आप झोपड़ी में या किराये के मकान में रह रहे हों और आपके चारों बच्चे आई०ए०एस० बन जायें, तो आप कैसा महसूस करेंगे? महल में रहने में अच्छा महसूस करेंगे या बच्चे का आई०ए०एस० बनने में। बच्चे का

आई०ए०एस० बनने में न!

जब सबसे बड़ी सम्पत्ति इंसान के लिए उसका शरीर है, जिसे छिन्न-भिन्न कर कोई संपत्ति प्राप्त करना नहीं चाहेगा, तो फिर वह क्यों भौतिक संग्रह के लिए अपने कर्मों से विचलित हो जाता है, जो नहीं होना चाहिए। अतः अपने शरीर को सबसे बड़ी सम्पत्ति समझते हुए कर्म की साधना करें, जिसमें सत्य रूपी मिश्री घुली हुई हो, तो आप इस धरती पर उन व्यक्तियों की श्रेणी में आ जायेंगे, जिस श्रेणी में स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस आदि महापुरुष हैं।





फूल कभी दोबारा नहीं खिलते,
जन्म कभी दोबारा नहीं मिलते,
मिलते हैं लोग हजारों मगर,
लाखों गलतियाँ माफ करने वाले
माँ-बाप नहीं मिलते।

माँ की दुआ खाली नहीं जाती,
उसकी बददुआ टाली नहीं जाती,
बर्तन माँज कर भी माँ तीन-चार बच्चे को
पाल लेती है,
लेकिन दुल्हन आने के बाद तीन चार बच्चों
से एक माँ पाली नहीं जाती।

हर एक हद से गुजर जाती है माँ,
बच्चे के लिए बाजार उतर जाती है माँ,
माँ के पसीने ने घर में महकाए गुलाब,
अपने अरमान खुद ही कुतर जाती है माँ।

जब से दुल्हन आई है वह चुप सी रहती है,
औलादों का कहना है सुधर गई है माँ,
बहु-बेटों ने किया था जान पर हमला,
जब पुलिस आई तो मुकर गई माँ।

अब केवल यादों में नजर आएगी तेरी दुनिया,
हमको छोड़ ऊपर चली गई है माँ।



स्वप्न पर विजय

मन्दु कुमार सिन्हा
लेखाकार, आई0टी0एस0



स्वप्नों का बड़ा ही खास महत्व होता है हम सबों के जीवन में। कुछ सपने बड़े ही रोमांचक, खुश करने वाले, डरावने या भयभीत करने वाले होते हैं। सपनों की विवेचना या उसकी व्याख्या इससे संबंधित जानकारी अलग-अलग तरीकों से करते हैं। कभी-कभी कुछ ऐसे सपने होते हैं, जो बराबर आया करते हैं। एक ऐसा ही सपना जो बराबर आया करता था, के बारे में इस चेतना पत्रिका के माध्यम से बताना चाहता हूँ, कृपया गौर करेंगे।

उन दिनों की बात है, जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था। एक सपना कुछ वर्षों से लगातार मुझे आया करता था, जिसके कारण मैं बुरी तरह भयभीत हो जाता था। वह सपना इतनी बार आया कि वह मेरे जहन में पूरी तरह समा गया। सपने में एक व्यक्ति जो काला कम्बल ओढ़े रहता था, मेरे सामने खड़ा हो जाया करता था। वह बहुत ही बड़ा भयानक दिखता था, हांलाकि कम्बल से ढके होने के कारण उसका चेहरा नहीं दिखता था। उसके हाथ में एक चाकू भी रहता था, जिसे लेकर वह जैसे ही मेरी तरफ बढ़ता था, मैं भयभीत हो जाया करता

था। भयभीत होकर मैं जैसे ही भागने लगता, कुछ दूरी चलने के बाद मेरा एक पैर काम करना बंद कर देता था, तब मैं अपने दूसरे पैर के सहारे भागने की कोशिश करता, लेकिन भाग नहीं पाता था और जैसे ही वह नजदीक आकर मेरे को चाकू से नुकसान पहुँचाने की कोशिश करता, मेरी नींद टूट जाती और ठीक उस समय की मेरी हालत ऐसी रहती थी कि जैसे मैं शेर की गुफा से जीवित निकलकर अभी-अभी बाहर आया हूँ।

वही सपना बराबर आते-आते मुझे आदत हो चली थी। हांलाकि इस सपने के बारे में मैंने कभी किसी को नहीं बताया। सपने ने मुझे बुरी तरह परेशान करके रख दिया था। मैं इस सपने से निजात पाना चाहता था, लेकिन क्या करूँ? मैं सोचता कि सपने में कम्बल वाला व्यक्ति मुझे चाहकर भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता। क्योंकि सपना तो सपना ही होता है। मैंने आगे सोचा कि सपने वाला व्यक्ति से क्यों न डटकर मुकाबला किया जाये। कुछ दिनों बाद वही स्वप्न वाला व्यक्ति कम्बल ओढ़े फिर आया और मैं उसी प्रकार भयभीत हो गया। नींद टूटने पर पुनः मुझे

अहसास हुआ
चाहिए था। ऐ
हर बार डरत
करने का निप

एक वि
प्रत्येक दिन
पर सोने के वि
किया कि अग
वाला व्यक्ति
मुकाबला क
पानी पीकर म
जैसे ही आध
विशालकाय व
चाकू लिए हु
डरकर भागता
सपने में ही

अहसास हुआ कि मुझे मुकाबला करना चाहिए था। ऐसा कई बार हुआ और मैं हर बार डरता गया, लेकिन मुकाबला करने का निर्णय बराबर लेता रहा।

एक दिन की बात है, जब मैं प्रत्येक दिन की भाँति अपने बिछावन पर सोने के लिए गया और दृढ़ निश्चय किया कि अगर आज सपने में कम्बल वाला व्यक्ति आया तो मैं जरूर उसका मुकाबला करूँगा। यह सोचते हुए पानी पीकर मैं बिछावन पर सो गया। जैसे ही आधी रात बीता, वही बुढ़ा विशालकाय व्यक्ति काला कम्बल ओढ़े चाकू लिए हुए सपने में आया, मैं डरकर भागता गया, भागता गया और सपने में ही भागते-भागते अहसास

हुआ कि मैं मुकाबला करूँ और भागना बंद करके और पूरे साहस के साथ मुकाबला करने को पीछे पलटा और उसे धक्का देने की जैसे ही कोशिश की, मैं उसके आर-पार हो गया। फिर पलटकर देखा तो वहाँ कोई नहीं था और मेरी नींद खुल गई। नींद से जागने के बाद मुझे बहुत शकुन मिला कि आज मैंने उस व्यक्ति से डटकर मुकाबला किया। उस दिन के बाद से वह डरावना सपना दुबारा कभी नहीं आया।

यह कहानी शायद आपको काल्पनिक लगे, परन्तु मेरे लिए यह काल्पनिक नहीं वास्तविक घटना है।



■ ■ ■



मो० राशिद जमील,
वरीय लेखाकार, प्रशासन-2

दरिया तलाश कर

न दरिया तलाश कर न समुन्दर तलाश कर,
दिल को जहाँ मिले सकून वह दर तलाश कर।

मिलना किसी भी चीज का हरगिज नहीं महाल,
मिल जाएगा खुदा भी गर तू तलाश कर।

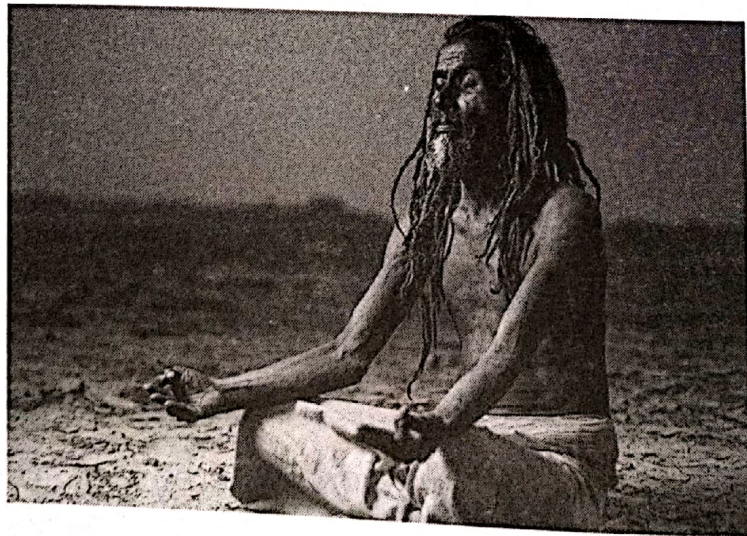
जो चीज की तलाश तू करता है गैरों में,
बेहतर है तू उसे अपने ही अन्दर तलाश कर।

रह जाएगा भटककर दुनिया की भीड़ में,
मंजिल के वास्ते कोई रहबर तलाश कर।

क्यों खार हो रहा है, तू जमाने की नजर में,
कामयाबी के वास्ते कोई रास्ता तलाश कर।

चूमेगी कामयाबी हर पल तेरा कदम,
रास्ता कोई तू भलाई का तलाश कर।

दरिया खंघालने से क्या फायदा तुम्हें,
जाकर समुन्दर में मोती तलाश कर।



■ ■ ■



धीरज कुमार
लेखाकार, प्रशासन-1

गाँधीजी का ग्राम स्वराज

(स्वप्न और यथार्थ)

गाँधीजी के बारे में महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने लिखा है 'आने वाली पीढ़ियाँ शायद ही इस बात पर यकीन करे कि हाड़-मांस का एक ऐसा इंसान भी कभी धरती पर आया था। मोहनदास करमचंद गाँधी जिन्हें बाद में दुनिया ने महात्मा गाँधी के नाम से जाना। गाँधीजी बहुत ही आयामी व्यक्ति थे। उन्होंने सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में सत्य के अनेक प्रयोग किये। जीवन में कोई भी आयाम ऐसा नहीं है, जिसे महात्मा गाँधी ने स्पर्श न किया हो और जिस पर अपनी अलौकिक प्रतिभा की छाप न छोड़ी हो।

गाँधीजी राजनीतिक होने के साथ-साथ दार्शनिक, विचारक, अर्थशास्त्री और समाज सुधारक भी थे। अछूतों को न्याय दिलाने और महिलाओं को पुरुषों के बराबर लाने के लिए गाँधीजी ने जो वातावरण पैदा किया, वह अत्यंत ही प्रभावशाली था। गाँवों को स्वराज दिए जाने का विचार गाँधीजी के व्यापक लोकतंत्र का केन्द्र बिन्दु था। स्वदेश और ग्रामोद्योग उनकी आर्थिक क्रांति के कवच थे। गाँधीजी ने बारम्बार इस बात को

रेखांकित किया कि आज जो शहरों में बोल-बाला है वह गाँवों की सारी दौलत लूटने के कारण है, जिसके कारण गाँवों का हरास एवं नाश हो रहा है।

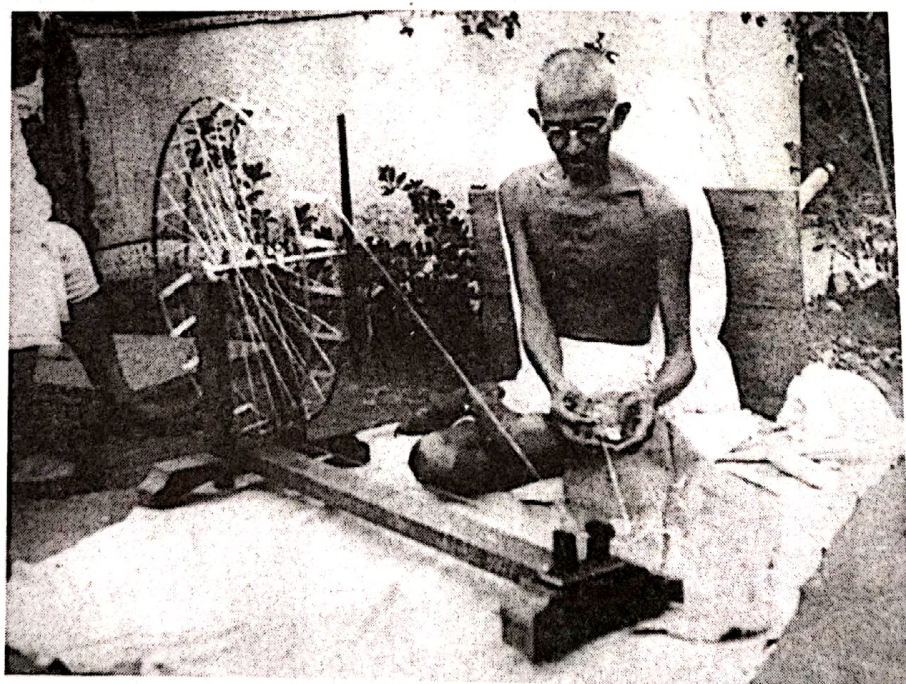
गाँवों का शोषण खुद एक संगठित हिंसा है। अगर स्वराज की रचना अहिंसा के पाये पर करनी है, तो गाँवों को उनका उचित स्थान देना होगा। 'हरिजन सेवक' के 20 जनवरी 1940 के अंक में गाँधीजी ने लिखा है कि "मैं कहूँगा कि अगर गाँवों का नाश होता है, तो भारत का भी नाश हो जाएगा।" और उस हालत में भारत माता भी नहीं रहेगी। दुनिया को जो संदेश देना है, उस संदेश को ही वह भारत खो देगा।

गाँधीजी के ग्राम स्वराज की अवधारणा का आज यथार्थ मुल्यांकन करें, तो हम पाते हैं कि गाँधीजी की बात हमने आधे अधूरे मन से स्वीकार की है। सरसरी तौर पर विचार किया है कि आर्थिक क्षेत्रों में स्वतंत्रता के बाद प्रगति काफी हुई है, किन्तु साथ ही हमारी समस्याएँ और दायित्व कहीं अधिक गंभीर और खतरनाक हो गये



हैं। हमारी ग्राम स्वराज व्यवस्था व उसकी संस्थायें बुरी तरह जर्जर हो गई हैं। अर्थव्यवस्था, निष्क्रियता तथा मुद्रास्थिति के लंबे दौर से गुजर रही है। हमारे समाज के नैतिक सूत्र की धजियाँ उड़ गई हैं। वस्तुतः गाँधीजी की दृष्टि में देश की स्वतंत्रता और ग्राम स्वराज एक ही चीज थे, लेकिन आज तेज रफ्तार से औद्योगिकरण और भीमकाय उद्योगों तथा वैसा प्राद्यौगिकी के मोह ने हमें इस तरह जकड़ लिया है कि बचा-खुचा ग्रामीण अर्थतंत्र भी चौपट हो गया है। गाँधीजी के ग्राम स्वराज संबंधी विचारों को हमने सतही तौर पर लिया। आज भारत का सार्वजनिक जीवन भ्रष्टाचार

की भेंट चढ़ चुका है और ग्रामीण जनता इसके मार से कराह रही है। राजनीति के साथ-साथ प्रशासन एवं व्यापार व्यवसाय से भी नैतिक मूल्यों को निष्कासित कर दिया गया है। गाँधीजी के देश में पैसे के बल पर पंचायत से लेकर संसद के चुनाव जीतने की कल्पना एक दुःखद विडम्बना है। गाँधीजी के शरीर की हत्या गौड़से ने की, किन्तु गाँधीजी के अनुयायियों, साथियों तथा उनके नाम पर वोट लेने वालों ने उन सिद्धांतों तथा आदर्शों की भी हत्या कर दी, जिसके लिए गाँधीजी आजीवन लड़ते रहे।



■ ■ ■



गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर माननीय महालेखाकर (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए ।



गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारीगण राष्ट्रगान प्रस्तुत करते हुए।



हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं महालेखाकार (लेखा परीक्षा) दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए।



हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तथा महालेखाकार (लेखा परीक्षा) हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का विमोचन करते हुए।



हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
श्री राजेन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक को पुरस्कार देते हुए।



हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कार्यालय कर्मचारी के बच्चे को पुरस्कार देते हुए।



हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं वरीय उप महालेखाकार (प्रशासन) कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए।



कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए।

चतुर चित्रकार

आदित्य कश्यप, कक्षा-3,
पुत्र-श्री संतोष कुमार सिंह। लेखाकार।



चित्रकार सुनसान जगह में बना रहा था चित्र,
इतने में ही वहाँ आ गया यमराज का मित्र।

उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गये होश,
नदी, पहाड़, पेड़-पत्तों का रह न गया अब जोश।

फिर उसको कुछ हिम्मत आई देख उसे चुप-चाप,
बोला सुन्दर चित्र बना दूँ बैठ जाइये अब आप।

उकरू-मुकरू बैठ गया वह सारे रंग बटोर,
बड़े ध्यान से लगा देखने चित्रकार की ओर।

चित्रकार ने कहा - हो गया आगे का तैयार,
अब आप मुँह उधर कीजिए जंगल के सरदार।

बैठ गया वह पीठ फिराकर चित्रकार की ओर,
चित्रकार चुपके से खिसका जैसे कोई चोर।

बहुत देर तक आँख मूँदकर बैठा रहा वह शेर,
बैठे-बैठे लगा सोचने चित्रकार से हुई अब क्यों देर?

झील किनारे नाव लगी थी एक रखा था बाँस,
चित्रकार ने नाव पकड़कर, ली जी भर के साँस।

जल्दी-जल्दी नाव चलाकर निकल गया वह दूर,
इधर शेर था धोखा खाकर झुँझलाहट में चूर।

शेर बहुत खिसियाकर बोला नाव जरा रे रोक,
कलम और कागज तू ले जा, रे कायर डरपोक।

चित्रकार ने कहा तुरंत ही रखिये उसे अपने पास,
चित्रकला का आप कीजिए जंगल में अभ्यास।

■ ■ ■



भगवान बुद्ध ने अपने धर्म में समता और बराबरी पर बहुत जोर दिया है। उन्होंने समाज में लोगों के बीच समानता की न केवल शिक्षा दी, बल्कि स्वयं भी उसपर चलकर दिखाया। उन्होंने महिलाओं को दीक्षा का अधिकार देकर भिक्षुणी बनने का मौका दिया और दुनिया के इतिहास में पहली बार एक पृथक और स्वतंत्र भिक्षुणी संघ की स्थापना की। स्त्रियों को बराबरी का अधिकार देने वाले विश्व के पहले धर्म गुरु बने। भिक्षुणी संघ की स्थापना कर गौतम बुद्ध ने नारी स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति दी और उनके चहुँमुखी विकास का रास्ता प्रशस्त किया। यह एक ऐसा क्रांतिकारी कदम था, जिससे स्त्रियों के स्वतंत्र अस्तित्व, उनके व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करने का मौका मिला और विश्व के इतिहास में पहली बार स्त्रियों ने यह सिद्ध किया कि आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलकर आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त करने में किसी भी तरह पुरुषों से कम नहीं हैं।

ई०पू० ५१५ में भगवान बुद्ध श्रावस्ती के जेतवना राम में विहार कर रहे थे। उनके उपदेश से कुछ ब्राह्मण नाराज थे, क्योंकि बुद्ध सामाजिक समानता के उपदेश दे रहे थे। एक दिन आश्वलायन नामक ब्राह्मण को ब्राह्मणों ने शास्त्रार्थ करने के लिए भगवान बुद्ध के पास भेजा। आश्वलायन भगवान

बुद्ध के पास आया और उनसे कहा - गौतम ब्राह्मणों का मानना है कि वे ही श्रेष्ठ एवं उत्तम हैं, क्योंकि वे ब्रह्मनिर्मित एवं ब्रह्मदायाद हैं। इस विषय में आपका क्या कहना है? इस पर भगवान बुद्ध ने उपदेशक शब्दों से उनका स्वागत करते हुए कहा कि “ऊँचे आदर्श का महत्व ऊँची जाति में जन्म लेने, असमानता एवं ऊँच-नीच में नहीं है” - यही तथागत की देशना है। इस प्रकार बुद्ध ने समता मूलक समाज की स्थापना करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बौद्ध धर्म में जात-पात का कोई स्थान नहीं था। भगवान बुद्ध का स्पष्ट मत था कि कोई जन्म से नहीं बल्कि कर्म से महान होता है। इस सन्दर्भ में एक कथा है:

एक दिन भगवान बुद्ध भिक्षु संघ के साथ गंगा तट पर स्थित एक गाँव में भिक्षाटन के लिए जा रहे थे। रास्ते में एक आदमी को मल-मूत्र ले जाते देखा, जिसका नाम सुनीत था। बुद्ध और भिक्षुओं को देखकर वह गंगा किनारे बढ़ गया। सुनीत के रास्ता बदलने पर बुद्ध भी उस ओर बढ़ गये। सुनीत मैले की बाल्टियाँ एक तरफ डालकर नदी में उतरकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। वह इस अपराध बोध से ग्रसित था कि उसके अस्पृश्य होने के कारण बुद्ध और भिक्षुक अपवित्र न हो जाएँ।

बुद्ध उसके निकट आये और कहा - मित्र, मेरे सामने आओ, ताकि हम एक दूसरे से बात कर सकें।

सुनीत ने कहा - प्रभु! मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?

बुद्ध ने उत्तर दिया - हमारे सधर्म मार्ग में जाति-पाति का कोई स्थान नहीं है। तुम भी हमारी भांति मानव हो, हमें अपवित्र होने का भय नहीं है। हमें केवल घृणा और इर्ष्या ही अपवित्र कर सकती है। तुम जैसे अच्छे व्यक्ति तो हमारे लिए आनंद के अतिरिक्त किसी बात का कारण नहीं बन सकता। संबोधि मार्ग में जाति का कोई स्थान नहीं है। जिस प्रकार गंगा, यमुना, कृष्णा ओर कावेरी नदियाँ समुद्र में मिल जाने पर अपना पृथक

अस्तित्व खो देती है, उसी प्रकार जो व्यक्ति सधर्म अपना लेता है, उसकी जन्मजात जाति छूट जाती है। भले ही वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र जाति में ही क्यों न जन्मा हो। सुनीत तुम चाहो तो शेष लोगों की भांति तुम भी भिक्षु संघ में शामिल हो सकते हो। बुद्ध ने सुनीत को वहीं प्रवज्या दी और अपने संघ में शामिल कर लिया।

आज भी जब भारत में संवैधानिक रूप से अस्पृश्यता खत्म हो चुकी है, तो भी अस्पृश्यता के कारण समाज के एक विशेष तबके को अधिकारों से वंचित किया जाता है। ऐसे में बुद्ध के उपदेश जन-जन तक पहुँचाना नितांत आवश्यक है, जिससे देश प्रगति के पथ पर चल सके।



■ ■ ■



संगीता कुमारी,
लेखाकार।

मेरी गाथा

मैं अपनी गाथा स्वयं कहूँ,
इसमें कोई प्रतिकार नहीं।
स्वर मेरा ही है शापित क्यों?
यह बात मुझे स्वीकार नहीं।

आँसू गिराते हैं ये मेरे नयन,
पीड़ा में जल रहा दिन रात ये मन।
बुनती रही अनंत सपने-सुमन,
सत्य को कहती मैं अपना धर्म।

फिर भी सुबकती रही मैं मौन,
दर्द लिए सिसकियाँ भरती रहीं।
पर तुमने मेरा हाल ना लिया,
पर मैं नहीं किसी से कम।

फिर मेरा तिरस्कार क्यों?
मेरी ही अग्नि परीक्षा क्यों?
बस मेरे लिए ही यहाँ सर्वथा नियम,
तो फिर सत्य की अराधना क्यों?





विजय कुमार,
स० लेखा अधिकारी।

वैष्णो देवी यात्रा

पारिवारिक जीवन में उत्थान-पतन होता रहता है। बचपन व किशोरावस्था में चिन्तामुक्त जीवन व्यतीत होता है। उम्र के बढ़ते-बढ़ते मनुष्य अपने जीवन यात्रा में बहुत सारे अनुभव प्राप्त करते हैं, जिसे नयी पीढ़ी को बताना उसका कर्तव्य हो जाता है।

अपनी जिन्दगी में भी एक पुत्री और एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्री की शादी हो गई, पुत्र घर से बाहर आई०आई०टी० जैसे संस्थान में पढ़ने लगा। आई०आई०टी० में नामांकन होने पर पत्नी को एवं मुझे भी बहुत प्रसन्नता हुई, किन्तु घर से दूर भेजने का भी दुःखः सताने लगा था, फिर भी उसके भविष्य के लिए उसे भेजना मजबूरी एवं खुशी दोनों थी।

इसी खुशी के दरम्यान माता वैष्णो देवी के दरबार में जाने की इच्छा जागृत हुई, किन्तु पत्नी को अर्थराइटीस एवं बी०पी० होने के कारण किसी साथी या पड़ोसी का होना अनिवार्य महसूस हो रहा था। दोस्त व

पड़ोसी का साथ पाने की उम्मीद में चार वर्ष गुजर गये, परन्तु माता के दरवार में नहीं पहुँच पाये।

मैं अपने कार्यालय आने के क्रम में अपने निवास स्थान से दो किलोमीटर पैदल चलने के उपरान्त प्रत्येक दिन सवारी प्राप्त कर कार्यालय पहुँचता हूँ। एक दिन जब मैं कार्यालय आ रहा था, तो रास्ते में जान-पहचान वाला व्यक्ति मेरे पास आकर अपना दो-पहिया वाहन रोक दिया और बैठने को कहा। मैं चुपचाप दो-पहिया वाहन पर पीछे वाली सीट पर बैठ गया। गाड़ी रुकने के बाद आगंतुक महाशय द्वारा लाख कोशिश करने के बावजूद भी गाड़ी स्टार्ट नहीं हो पा रहा था। अन्त में काफी परिश्रम के बाद गाड़ी स्टार्ट हुआ और हमलोग गन्तव्य स्थान पर आसानी से पहुँचे।

उक्त घटना से मुझे अनुभव हुआ कि स्वयं प्रयास करने पर कार्य की उपलब्धि हो जाती है, अर्थात् प्रारम्भिक कठिनाई का समाधान हो जाने पर गन्तव्य स्थान तक आसानी से पहुँचा

जा सकता है।

इस प्रयास के बाद माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए तिथि का निर्धारण करते हुए टिकट बुक करवाया और समय पर पति-पत्नी दोनों अकेले प्रस्थान कर गये, लेकिन पत्नी के स्वास्थ्य की चिन्ता बराबर मन में बनी रहती थी। माता की कृपा से बिना किसी कष्ट के माता-दर्शन के पश्चात्

अपने निवास स्थान को वापस आ गये।

इस लेख को चेतना पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु देने का आशय यह है कि किसी भी कार्य का प्रारम्भिक कष्ट यदि दूर हो जाये, तो उसका निष्पादन स्वतः एवं बिना रोक टोक के आसानी से हो जाता है।



बाल श्रम-एक अभिशाप

सुमन संगम,
लेखाकार, प्रशासन-1



हम भारत माँ के सपूत हैं, इसके पहरेदार बनेंगे,
इस देश की पूंजी हैं, हम इसके कर्णधार बनेंगे।

हम कली हैं, फूल बन कर इस चमन को गुलजार करेंगे,
मोती हैं हम, माला बन कर भारत माँ का श्रृंगार बनेंगे।

चिकित्सक बन कर लाचार बेबस की दवा करेंगे,
फौजी और अफसर बन कर देश की सेवा करेंगे।

हम पढ़-लिख कर समाज की तरक्की में भागीदार बनेंगे,
मानवता के रखवाले, इस देश के तारनहार बनेंगे।

पर क्यों इन सपनों को आँखों से छीन हमारा बचपन उजाड़ दिया,
भारत के भविष्य को तुमने क्यों आज बाल श्रमिक का नाम दिया।

हमें भी सुननी है, महापुरुषों की कहानियाँ,
पर क्यों मिलती है हमें, हमारे मालिकों की गालियाँ।

क्यों न हमें खेल-कुद में अव्वल का पुरस्कार मिलता है,
हमें तो नींद से सोने पर भी बेरहमी से मार मिलता है।

माँ ममता की मूरत से, क्यों कठोर हो गयी तुम,
चन्द सिक्कों में मेरा सौदा कर, क्यों विभोर हो गयी तुम।

मुझे तो दुनिया देखनी थी पापा के कन्धे पर,
पर उन्होंने भेज दिया मुझे पैसे कमाने धंधे पर।

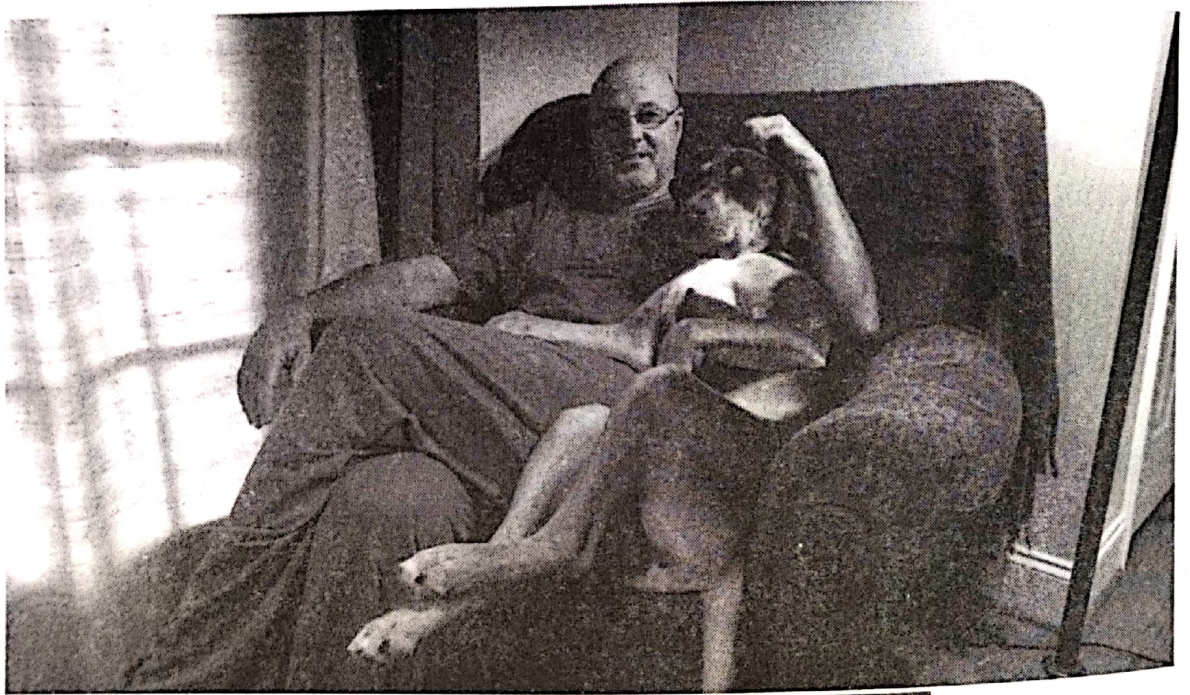
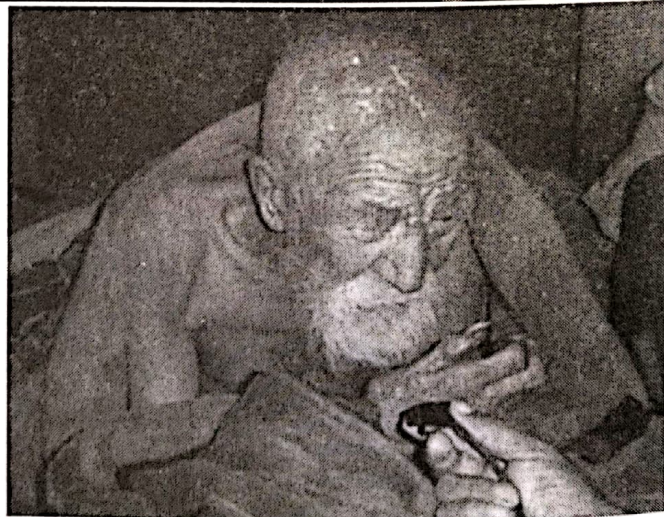
सब के जूटे साफ कर, अब दिल रोता है माँ,
हाथों में पड़े छालों से बहुत दर्द होता है माँ।

खेतों में कड़ी धूप में, बैलों के साथ जल रहा हूँ,
मालिक के हर इशारे पर, काँटों पर चल रहा हूँ।

साहेब ने कुत्तों के लिये बिस्तर बनवाया है,
और मुझे कोने में कीड़े-मकोड़ों के साथ सुलाया है।

मेरे हाथ में जली रोटी और कुत्तों को स्वादिष्ट पकवान होने पर,
शर्मिन्दगी होती है अब तो, खुद के इन्सान होने पर।

आँखों में आँसू और मन में विलाप है,
क्या यही मेरी नियती है, या मेरा अभिशाप है॥





भूल सुधि जग जीवन की
गीत प्रणय का गाती हूँ।
निज हृदय की व्यक्त कथा
अश्रु जल से सहलाती हूँ।

पा करुणा का वरदान जगत में
कण-कण में करुणा बरसाती हूँ,
कितना कोमल हृदय है मेरा
पर पीड़ा सह न पाती हूँ।

स्वर निंदा के विष का प्याला,
पी कर भी मीरा सी मुस्काती हूँ,
भूल सुधि जग जीवन की
गीत प्रणय का गाती हूँ।



■ ■ ■



अनमोल आनंद (एम0टी0एस0)
(आई0टी0एस0)

हिमालय दर्शन

यह कहानी एक यात्रा वृत्तांत है, जो हिमालय दर्शन से संबंधित है और जिसे मैं शब्दों में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

अनमोल - भैया अगर इस साल नहीं जा पाए तो कभी नहीं जा पाएँगे।

भैया - हाँ ये तो ठीक है अनमोल, मगर बस हम दोनों के लिए कुछ ज्यादा तुफानी नहीं हो जाएगा।

अनमोल - भैया बात तो ये है, क्या किया जाए तब, छोड़ दिया जाए इस साल ?

भैया बोले - अनमोल हमें कुछ दिन सोचने दो।

अनमोल - ठीक है भैया!

फिर कुछ दिन बाद मन्दु भैया बोले, अनमोल! चलो बस हम ही दोनों चलेंगे बाकि कोई और तैयार नहीं है। शशिजी एस0ए0एस0 परीक्षा के बाद जाने के लिए बोल रहे हैं, मगर तब तक तो रोहतांग पास बंद हो जाएगा और हम लेह तक नहीं जा पाएँगे। कुन्दनजी के घरवालों ने मना कर दिया। बाबाजी (नीरज कुमार, उत्पाद निरीक्षक) भी कुछ साफ-साफ नहीं बोल रहे हैं। ये सुन के मैंने और मन्दु भैया ने पटना से दिल्ली का टिकट ले लिया। इसके बाद मन्दु भैया ने अपने

हार्सअप ग्रुप पर उस टिकट को शेयर किया। यह देख तीन और लोग भी जाने को तैयार हो गए। सभी ने दिल्ली पहुँचने के लिए 03/09/2016 का टिकट ले लिया।

पहले से बाबाजी, जिनकी कोलकता से विमान यात्रा थी दूसरे थे, रितेश (डाटा वैज्ञानिक, ट्रीबो) भैया बेंगलोर से और सोनू (व्यवसायी) भैया गया से आने वाले थे। काफी इंतजार के बाद आखिर में 03/09/2016 की तिथि आ गई। बाबाजी दिल्ली सुबह ही पहुँच गये थे। सोनू भैया करीब 12 बजे पहुँचने वाले थे और हम और मन्दु भैया अपने घर से निकले और 2:30 अपराहन हवाई अड्डा पहुँचे। हमारी 3:00 बजे की विमान यात्रा थी और 4:30 तक दिल्ली में थे। 6:00 बजे शाम को हम बाबाजी और सोनू भैया से मिले तो पता चला कि रितेश भैया मनाली पहुँच चुके हैं। रात्री भोजन के पश्चात 10 बजे रात्री को हमने मनाली के लिए वोल्बो बस लिया। दिल्ली से मनाली रोड जाने में 13 से 15 घंटे लगते हैं। यात्रा के दौरान हिमालय की खूबसूरत वादियों में मेरा ओर मन्दु भैया की तबीयत खराब हो गई। हम दोनों को बस यात्रा के दौरान काफी परेशानी होती थी।

अपने तबीयत को देखते हुए हमें इस बात का डर होने लगा कि शायद हम मनाली से लेह रोड यात्रा बुल्लेट से नहीं कर पायेंगे। 04/09/2016 को करीब 3:30 अपराह्न तक हम चकराता हुआ सर लेकर मनाली पहुँचे। रितेश भैया ने होटल पहले से ही कर रखा था। एक कैब कर हम होटल ट्रीबो सेलीब्रेटी पहुँचे। वहाँ पर रितेश भैया ने बताया कि उन्होंने तीन बुल्लेट 500 सी0सी0 बुक कर लिया है। भारतीय नागरिकों को रोहतांग पास से आगे जाने के लिए इन्नर लाईन परमिट लेना पड़ता है।

होटल से कुछ भोजन कर हम 5:00 बजे शाम मनाली, लद्दाख में काम आने वाले बाकी सामान की खरीददारी करने चले गए। फिर बाइकों की सवारी कर उसकी जाँच की। उन तीन में से एक बाइक बार-बार खराब हो जा रहा था, मगर रात तक वह सही हो गया। तीनों बाइकों को छः दिनों के लिए भाड़े पर लेकर हम होटल गये और हम वहाँ से मनाली के प्रसिद्ध सोमा कैफे। वहाँ बाबाजी ने अपने मधुर वाणी से रंगमंच से गाकर वहाँ उपस्थित भारतीय एवं विदेशी मूल के लोगों का भी दिल जीत लिया। लोग प्रशंसा करते हुए अपनी तालियाँ रोक नहीं पा रहे थे। रात के करीब एक बजे हम सोमा कैफे से अपने होटल वापस आ गये।

अगले दिन करीब 7:00 बजे उठकर हम सभी लद्दाख जाने को

तैयार हुए। मगर जैसे ही हम बाइक के पास पहुँचे, हमने देखा कि एक बाइक पंचर हो गया है। उसे ठीक कराते-कराते दिन के दो बज गए। आखिर हम मनाली से रोहतांग पास के लिए चल दिये जो मनाली से करीब पचास किलोमीटर है। करीब 4:00 बजे हम रोहतांग पास पहुँचे, जिसकी समुद्र तल से उँचाई करीब 13,060 फीट थी। रोहतांग पास को लद्दाख का गेटवे भी बोलते हैं। वहाँ से हम केवल बर्फ से भरे पहाड़ तथा बादलों से भरी खाई ही देख पा रहे थे। कुछ समय बाद हम रोहतांग पास से जिसपा की ओर चल दिए जो करीब वहाँ से करीब 110 किलोमीटर था।

हम सभी को लग रहा था कि मनाली से लेह जाने में रास्ता नहीं भूलेंगे, मगर ऐसा नहीं था। एकबार ऐसे रोड में जा फँसे, जो दो रोडों में बँट जाता है। हमने एक स्थानीय लोगों से पूछा तो बताया कि ऊपर जाने वाली सड़क ले लीजिए। 10 किलोमीटर ऊपर आगे जाने के बाद हमें पता चला कि यह गलत रास्ता है। रास्ते में बारिश होने लगी थी, पर बादल का पता नहीं था। ये बहुत अजीब ही जगह था जहाँ बादल होने चाहिए वहाँ नहीं था और जहाँ नहीं होने चाहिए, वहाँ था। बाकी लोगों ने रेनकोट पहन रखा था मगर मैंने नहीं। बारिश में ही भीगते हुए हम 10 किलोमीटर वापस आ गए और वहाँ से सही रास्ता चुना। चूँकि मैं भीग चुका था, इसलिए मन्द

भैया ने मुझसे बाइक लेकर अपना जलवा दिखाया शुरू किया। उन्हें देखकर बाकी के दो सवारों ने भी अपनी रफ्तार तेज कर दी। जहाँ अब तक हम 40-50 किलोमीटर प्रति घंटा से चल रहे थे, वहाँ अब हम 70-80 की रफ्तार से पहाड़ियों में चल रहे थे।

केलांग हम करीब 7:00 बजे पहुँचे और वहाँ से तेल भरा लिया, क्योंकि अगला पेट्रोल पंप करु में था, जो वहाँ से 375 किलोमीटर पर था। वहाँ से हम मन्दु भैया के नेतृत्व में करीब 9:00 बजे रात जिसपा पहुँचे। जिसपा में हमने एक कैम्प लिया और अपने बाइकों से सारा सामान उतार दिया। वहाँ से खाना खाने गये, जहाँ तीन लोगों से हम मिले, जो सिक्किम से बाइक चला कर आये थे। सिक्किम से नेपाल, उत्तराखंड और फिर हिमाचल से होते हुए लद्दाख जाने वाले थे। रात्री भोजन के पश्चात् हम सब सोने चले गये।

करीब 6:00 बजे सुबह उठकर कुछ खा-पीकर हम सभी 7:00 बजे जिसपा से निकल गये। आज हमें जिसपा से लेह जाना था, जो करीब 350 किलोमीटर था। जिसपा से हमें सरचू पहुँचना था, जिसकी सड़क बहुत खराब थी, पर हिमालय दर्शन रोमांचित था। जिसपा से सरचू करीब 80 किलोमीटर था। लद्दाख की एक बात बहुत अच्छी है, अगर यहाँ के माइलस्टोन 80 किलोमीटर बताते हैं तो आप उसे 100 से कम मत

समझें। सुबह के 7:00 बजे से चलते हुए करीब 12:00 बजे सरचू पहुँचे। समय नहीं होने के कारण हम सरचू में ज्यादा देर नहीं रुके।

अब हमें वहाँ से पोंग जाना था, जो कि वहाँ के माइलस्टोन के अनुसार 80 किलोमीटर पर था। करीब 3:30 बजे उँची पहाड़ी से नीचे उतरने के बाद हम सभी एक छोटी सी जगह पर खाने के लिए रुके। तब तक सोनू भैया का तबीयत बहुत खराब हो गयी थी। रितेश भैया के कहने पर हमने करीब 30 मिनट विश्राम किया और फिर वहाँ से पोंग के लिए चल दिए। पोंग हमने 6:00 शाम में पार किया। खाने के नाम पर हमने पूरे दिन में एक मैग्गी खायी थी और समय न होने की वजह से पोंग में विश्राम नहीं कर पाये। करीब 11 घंटे हो गये थे, रात होने चली थी और अभी भी हमें 200 किलोमीटर और जाना था। एक अच्छी बात यह थी कि पोंग से लेह की सड़क काफी अच्छी थी।

पोंग के बाद मोरे प्लेस आता है जो 60 किलोमीटर लम्बा है, जिसे हमने 40 मिनट में पार कर लिया। मोरे प्लेस अत्यंत ही खूबसूरत था। इसके बाद हमें तंगलंगला पास करना था, जो करीब 17,840 फिट की उँचाई पर था। तंगलंगला पास के सामने एक ग्लेशियर था, जिसकी वजह से वहाँ ठंड थी। इस मुश्किल परिस्थिति में फिर मन्दु भैया ने अपने कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए हमें

तंगलंगला पास पार करवाया और 10 बजे तक उपसी एवं 11 बजे तक लेह पहुँचाया। लेह में नेतृत्व का भार रितेश भैया ने सम्भाला। होटल जो पहले से ही बुक था उसे काफी परेशानी से ढूँढा। होटल मिलने के पश्चात् हमलोग खाना खाकर सो गये।

अगले दिन 07/09/2016 को हम सभी करीब 11 बजे सोकर उठे। भोजन कर हम फिर से पर्यटन को निकले। लेह घूमकर हम करीब 3 बजे खारदुंगला के लिए निकले। खारदुंगला लेह से करीब 40 किलोमीटर पर है। उसकी ऊँचाई 18,380 फीट है और विश्व की उच्चतम मोटरेनल सड़क है। वहाँ करीब हम 4:30 बजे शाम को पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर हमारी दृष्टि केवल बर्फ की चादरों पर ही टिकी हुई थी। वहाँ काफी ठंड थी और काफी ऊँचाई होने के कारण साँस लेने में तकलीफ हो रही थी। हम वहाँ एक घंटा रुके और वहाँ जमे बर्फ से हम खेले और कुछ सुन्दर तस्वीरें ली।

रितेश भैया बोले कि दिस्कीत गाँव यहाँ से करीब 80 किलोमीटर है और जो तीन घंटे का रास्ता है, चल चलें। फिर हम सब दिस्कीत गाँव की ओर चल दिए। जब हम दिस्कीत गाँव पहुँचे तब करीब 9:00 बज रहे थे। दिस्कीत आकर पता चला कि दिस्कीत नुबरा घाटी का मुख्यालय है। नुबरा घाटी लद्दाख की सबसे खूबसूरत घाटी है, जैसे बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच रेगिस्तान। होटल में जाने पर वहाँ

खाना खाया। हमने होटल प्रबंधक ने बताया कि दिस्कीत में एक बहुत उँचा 80 फिट का बुद्ध मूर्ति है, जो कि दिस्कीत मानेस्ट्री में है और यहाँ का प्रसिद्ध सवारी ऊँट का है।

पैगांग के बारे में पूछने पर प्रबंधक ने बताया कि पैगांग यहाँ से 150 किलोमीटर पर है, लेकिन वहाँ जाने के लिए एक नदी पार करना पड़ेगा, जिसपर पुल नहीं है। उस नदी को 9:00 बजे के बाद पार नहीं किया जा सकता, धूप की वजह से बर्फ के पिघलने पर नदी में पानी की मात्रा सनय-सनय बढ़ता जाता है, जो अधिकतम 3:00 बजे तक 10 फिट तक बढ़ जाता है। इसके लिए आपको सुबह 6:00 बजे ही निकलना होगा। यह सुनकर हम सभी चिंतित हो उठे। खाना खाकर हम सभी ने यह निश्चय कर लिया कि हम बुद्ध मूर्ति के दर्शन करने के बाद दुबारा घाटी होते हुए सीधा पैगांग के लिए चल पड़ेंगे।

08/09/2016 की सुबह के 4:00 बजे, अभी सूरज निकला भी नहीं था कि हम चलने को तैयार हो गये। हमने होटल से सीधे बुद्ध मंदिर पहुँचे। वहाँ का दृश्य मनोरम था। बुद्ध मूर्ति के पेडेस्टल से रास्ता नुबरा घाटी दिखती थी। वहाँ से सीधा पैगांग लेक की ओर चल दिए, जो करीब 150 किलोमीटर पर था और सड़क काफी खराब थी। हम पाँचों से करीब एक-एक बार बाइक गिर चुकी थी। जब तक हम पैगांग लेक पहुँचे तब

तक हमारे तीन बाइक में एक का सस्पेंशन और एक का अगला ब्रेक खराब हो चुका था। करीब 150 किलोमीटर की यात्रा के दौरान हमें मात्र दो गाड़ियाँ ही दिखी थी। 8:00 बजे तक हम नदी के पास पहुँच चुके थे। नदी में करीब आधा फीट पानी था। हमने बड़ी मुश्किल से संयुग नदी पार किया। नदी पार करने के पश्चात् हमने राहत की साँस ली। करीब 2:00 बजे हम पैगांग लेक पहुँचकर एक कैंप कर लिया। उसके बाद हम बेहद खूबसूरत पैगांग लेक घूमने गये। पैगांग लेक बहुत खूबसूरत था, उसका पानी दिन के समय में तीन अलग-अलग रंगों में दिखाई पड़ता था, जिसमें हरा और नीला तो स्पष्ट दिखता था।

अगले दो दिन में हमें 600 किलोमीटर तय करके मनाली पहुँचना था। पहले दिन हम लाचागला-पास, जो 17,688 फिट पर स्थित था, उसे पार कर हम कारु पहुँचे। अपने बाइक की मरम्मत कराई और सोनू भैया लेह की ओर निकल गये। अगले दिन उनका दिल्ली के लिए लेह से विमान यात्रा थी। हम चार लोग करु से 4:00 बजे पांग के लिए चल दिए।

करीब 200 किलोमीटर चलने के बाद हम रात 8:00 बजे पांग पहुँचे। अगले दिन हम जल्दी चल दिए। पांग से चलते हुए नकीला-पास 15,547 फिट, लाचुगला 16,161 फिट से होते हुए गाटा लुपस 13,750 फिट, 8 किलोमीटर में 22 लुपस सरुचु, फिर भरतपुर उसके बाद लाचागला-पास 16,000 फिट होते हुए जिंग बार पहुँचे। वहाँ से दरचा, केलांग फिर रोहतांग पास पहुँचे। रोहतांग-पास करीब 7:00 बजे रात में पहुँचे थे।

वहाँ पर रोहतांग बादलों से घिरा था, 5 मीटर से ज्यादा हमें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वहाँ हमने 10 की रफ्तार से चलते हुए रोहतांग-पास सुरक्षित तरीके से पार कर लिया। जब हम रोहतांग-पास पार कर रहे थे, तो नीचे मनाली में बारीश हो रही थी। फिर रात के 9:00 बजे हम मनाली पहुँचे। मनाली पहुँचने के बाद हमें बहुत गर्व महसूस हो रहा था। पिछले छः दिनों की थकान अचानक मिट गई थी। अगले दिन हम सुबह दिल्ली चल दिए और शाम में पटना के लिए हवाई अड्डा पर पहुँच गये। हमारी 7:00 बजे की हवाई यात्रा थी और हम 8:15 तक पटना हवाई अड्डा पर थे।





विदु शेखर
लिपिक

एक प्यारी सी याद

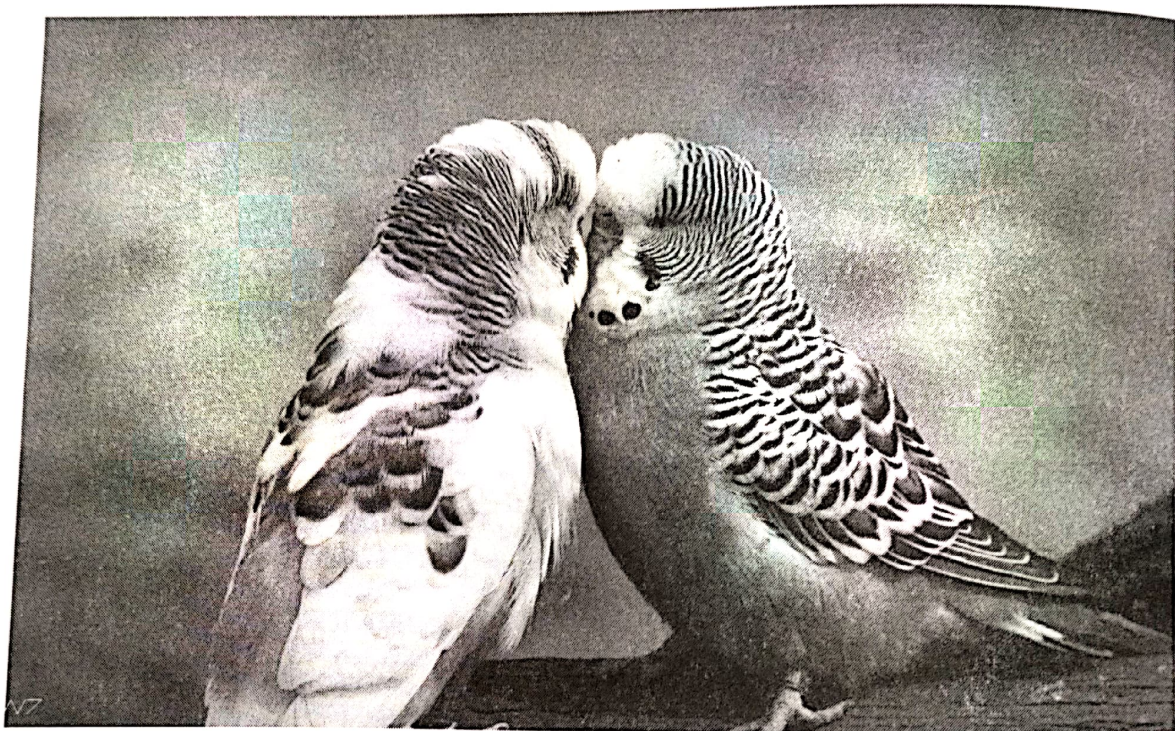
मुझे याद आते हैं,
पहाड़ों से चिपकी हुई नदी के किनारे
तुम्हारे रुक-रुक कर कदमों की कलख
हाथों में कोमल हथेलियाँ
सरसराती उँगलियों की बातें
आँखों में चमकते जुगनुओं की हँसी
और गालों में लाली शरमाई।

किनारों पर उगी हुई घासों की
उठती-गिरती ढलानों पर
साथ-साथ चलते वक्त जैसे रुका हुआ
तुम्हारे अधरों को छूता आसमान
बहकता मन समेटे
संसार की खुशियाँ अपरम्पार।

हम धीरे-धीरे चलते रहे
तुम्हारे दुपट्टे से सरकती हवा
एक मादक गंध सी बिखेरती
सारे जहाँ की खुशियाँ
ज्यों ही मन को भिगोती
एक छोर से दूसरे छोर तक
सुनसान नदी बहती रहती।

शाम की किरणों के संग
पंछियों के झूंड पानी पर तैरते
मंद-मंद गाते
न जाने कहाँ से आते
क्षण भर रुककर उड़कर चले जाते
नदी का किनारा और बैठे हम
एक दूसरे के मन में समाये
अनमोल क्षण निकलकर सरक गये।

रास्ते के छोर कहाँ से दूट गये
समय का बवंडर और
बिजली सी चमकती वो यादें
तुम्हारे गाल तुम्हारे बाल
तुम्हारी हँसी तुम्हारी आँखें
सारे इतिहास बन गये
एक बीता हुआ इतिहास।



■ ■ ■



सत्येन्द्र माँझी

एम0टी0एस0

पुत्रवती भव

बारह साल पहले शादी हुई। नई-नई शादी के बाद जिसके पैर छूता तो आशीर्वाद मिलता - पुत्रवती भव! कई लोग कहते कि जल्दी ही बड़ा समारोह करना। तीन साल बाद जब बेटी का जन्म हुआ तब बड़े-बूढ़े सब दुःखी हुए कि बेटी के बदले बेटा ही होता। फिर भी भविष्य की आस लगाकर पुनः आशीर्वाद दिया - पुत्रवती भव! उसी समय पड़ोस के घर में एक बेटा जन्म लिया।

ऐसा नहीं था कि हम घर वाले खुश नहीं थे, पर रीती-रिवाजों के चलते हमारे यहाँ सादी पूजा सम्पन्न हुई थी, वहीं पड़ोस के घर बेटा पैदा होने के कारण बेंड-बाजे के साथ नाच-गान हो रहा था। ऐसे भेद-भाव के रिवाजों से मन को बहुत ठेस पहुँची। आप भी महसूस कर रहे होंगे कि इतनी पुरानी बातों को इस लेख के माध्यम से आप तक पहुँचाने की कोशिश क्यों की है? कारण है, जब एक तरफ बेटे के आगमन पर बेंड बजाये जाते हैं और मिठाइयों का दौर चलता है वहीं दूसरी तरफ बेटी के पैदा होने पर शोक सा माहौल, क्यों?

जबकि इसी देश की बेटियों ने अपने आगमन पर पूरे देश को बेंड बजाने और फूल मालाओं के साथ मिठाइयाँ बांटने पर मजबूर कर दिया, पूरा देश उनको बधाइयाँ दे रहा है।

बेटियों के आगमन से पूरे देश में इतने बड़े समारोह को होते देखकर मुझे भी उम्मीद जगी है - हवा बदलेगी, पल्लवी, साक्षी, सिन्धु और सानिया जैसी कई लड़कियों को देखकर कई घरों में लड़कियों के प्रति नजरिया बदलेगी। जहाँ बेटियों की शादी के लिए दहेज व सोने (Gold) की चिन्ता सताती है, वहीं लोगों ने आज पहली बार बेटियों से ही सोने की मेडल लाने की आस देखी। अब कुछ भरोसा हो रहा है कि जहाँ लोग पहले शादी की बढ़ती उम्र की चिन्ता करते थे, वहीं अब उनकी परीक्षाओं और खेलों में भाग लेने की चिन्ता करेंगे। जहाँ लोग एक बेटा से अपना परिवार पूर्ण समझते थे वहीं अब शायद बेटी के जन्म के लिए मन्नत माँगेंगे। आज के दौर में चौतरफा बेटियों की सफलता को देखकर लोग नव दम्पति को आशीर्वाद देंगे - “पुत्रीवती भव!”

■ ■ ■



ऋषभ माँझी, कक्षा-1
पुत्र-श्री सत्येन्द्र माँझी (एम0टी0एस0)

बंदर और गिलहरी

बंदर बैठा एक पेड़ पर,
लम्बी पूँछ है, ऐंठा मगर।

पूँछ देखकर गिलहरी समझी,
है यहाँ पर एक झूला।

लगी झूलने उसपर बैठकर,
लगा बंदर को गुदगुदी।

लगा बोलकर बंदर हँसने,
गुदगुदी क्यों करते भाई ?

गिलहरी बोली बात सुनकर,
समझी मैं इसे एक झूला।

वाह भाई गिलहरी वाह,
बंदर ने बड़े प्यार से बोला।

झूला झूलना है तुझे तो,
लगा दूँ बोलो एक सिल्ली।

झूलो बैठे बड़े मजे से,
खेलो कूदो मेरे गिल्ली।





आदमी जो सोचता है शायद ही हो पाता है, पर होता वही है, जो मंजूरे खुदा होता है। एक हैं दुलारी बाबू, जो महालेखाकार कार्यालय में वरीय लेखाकार के पद पर कार्यरत हैं। कहने को तो वे मन से काफी मजबूत हैं, पर कभी-कभी मजबूरी आ जाती है। उनके बच्चे दोनों बाहर रहते हैं तथा पत्नी को भी यदा-कदा बच्चों के पास आना-जाना लगा रहता है। दुलारी बाबू की मजबूरी है कि वह अपनी पत्नी को बच्चों के पास पहुँचा दें और ले आयें। दुलारी बाबू अपने कष्ट को शायद ही किसी के पास प्रकट होने देते हैं। बहुत ही विनीत स्वभाव के हैं दुलारी बाबू।

अभी कुछ दिन पहले उनकी पत्नी अपने एक बच्चे के पास पुणे चली गई, पहुँचाने के लिए दुलारी बाबू को भी जाना पड़ा था। लौटे अकेले और अकेले ही अपने घर में रहने लगे। कुछ समय तो बहुत अच्छा निकला, परन्तु आधे समय गुजरने के बाद दुलारी बाबू बीमार पड़ गये। अकेला आदमी बीमारी की अवस्था में किसी प्रकार समय गुजारने लगे। पुणे जाने हेतु दुलारी बाबू काफी तैयारी कर

रहे थे, जो पूरा हुआ भी परन्तु भगवान को कुछ और मंजूर था। दुलारी बाबू को ट्रेन में बर्थ नहीं मिलने के कारण बहुत परेशान हो उठे। जो सामान उन्होंने इकट्ठा किया था वो सब खराब होने वाला था। दूसरे दिन भी उन्होंने ट्रेन में आरक्षण की कोशिश की, लेकिन प्रयास विफल रहा। इसी प्रकार प्रयास करते-करते वो दिन भी आ गया जब दुलारी बाबू का टिकट कनफर्म होकर मिल गया। उनको ऐसा लगा जैसे कहाँ से जादू का चिराग मिल गया, क्योंकि ऊपर से बीमार और कई दिनों से उन्हें टिकट नहीं मिल रहा था। बीमार होते हुए भी न जाने उन्हें कहाँ से इतनी शक्ति मिल गई कि वे पुनः तैयार होने लगे पुणे जाने के लिए।

शुक्रवार का दिन था। दुलारी बाबू पुणे जाने के लिए समय से घर वापस आ गये। अब उन्हें परसा बाजार से निकलकर पाटलिपुत्रा स्टेशन गाड़ी पकड़ने के लिए जाना था। घर से निकलते वक्त घर की सभी बत्ती बुझाते हुए घर के सभी दरवाजे बंद कर दिए। अब शुभ यात्रा हेतु घर से निकलकर

जैसे ही प्रथम तल से भूतल पर आए, किरायेदार को आवश्यक निर्देश देने के क्रम में पानी के मोटर का स्टार्टर को घर से बाहर कर देने की सूचना दी गई। किरायेदार में कोई मर्द नहीं होने के कारण किरायेदार से एक बार मोटर चला कर देखने का अनुरोध किया। मन-बेमन किरायेदार की बातों को सुनकर आवश्यक जाँचोपरान्त यात्रा हेतु घर से निकल पड़े। जैसे ही स्टेशन पर आये तो पता चला कि गया-पटना पैसेंजर ठीक समय पर खुल गई। सामान कुछ अधिक रहने के कारण ट्रेन पर नहीं चढ़ पाये। खैर सुविधा की कमी नहीं थी। पटरी पार करते ही टेम्पो मिल गया, फिर क्या था? खुशी-खुशी यात्रा शुरू हो गई। कुछ किलोमीटर जाने के बाद पता चला कि आगे का रास्ता भीड़ से जाम है।

खैर कोई बात नहीं, समय बहुत काफी था ट्रेन पकड़ने के लिए, इत्मीनान से टेम्पो में बैठे रहे। कुछ पल बाद टेम्पो आगे की ओर रेंगने लगा, लेकिन थोड़ी देर आगे जाने के पश्चात् रास्ता पुनः जाम मिला। इन्तजार करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। खैर कुछ दूरी और चलने के उपरान्त टेम्पो और आगे बढ़ा, लेकिन मेरी बदकिस्मती कि कुछ पग और बढ़ते ही टेम्पो बंद हो गया। चालक ने बहुत कोशिश की, लेकिन

टेम्पो गतिमान नहीं हो सका। धीरे-धीरे समय गुजर रहा था। असमंजस में पड़ गये कि अब क्या होगा? खिन्न मन से दुलारी बाबू टेम्पो से सामान सहित उतरकर दूसरे टेम्पो में सवार हो गये। टेम्पो चालक अपने परिवार के साथ था, जिसमें उसके दो बेटे भी थे, जिन्होंने उत्पात मचा रखा था।

दुलारी बाबू पहले से ही खीझे हुए थे, ऊपर से उन दोनों बच्चों का आतंक, जिसपर किसी का कोई वश नहीं। रास्ते में भीड़ के कारण टेम्पो भी आगे बढ़ने का नाम नहीं ले रहा था और ऊपर से समय भी अपने द्रुतगामी चाल से आगे बढ़ रहा था। इसी बीच टेम्पो चालक गाड़ी से उतरने का हुक्म जारी कर दिया और कहा आप दूसरी गाड़ी पकड़ लीजिए। दुलारी बाबू ने काफी अनुरोध किया कि तुम्ही मेरे को स्टेशन पहुँचा दो, लेकिन वो एक न माना और अन्त में हम गाड़ी से उतरकर रोड पर आ गये। पथ तो पहले की ही तरह जाम था, अब दुलारी बाबू बीमारी की अवस्था में अकेले एक हाथ में सूटकेस और दूसरे हाथ में भारी थैला लिए आगे पैदल चल पड़े। स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था, परन्तु मन के धनी और मजबूत होने के कारण थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर एक दूसरा टेम्पो मिला, जिसपर बिना

समय गँवाये सवार हो गये।

कुछ आगे बढ़ने के उपरान्त ट्रेन उस गुमटी से गुजरी, पर भीड़ के कारण टेम्पो आगे बढ़ने को तैयार नहीं। ट्रेन छूटने का डर सताने लगा, क्योंकि समय तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। पुनः टेम्पो से अपना सामान उतारकर आगे बढ़े। सोचे थे कि आगे जाने के पश्चात् दूसरा टेम्पो मिल जाएगा, लेकिन पैदल चलने की भी जगह शेष नहीं थी और पीछे लौटने की भी जगह नहीं। दम घुटने जैसी अवस्था हो गई, करे भी तो क्या करे दुलारी बाबू! ट्रेन पकड़कर पुणे जाना था और अभी तक परसा बाजार से पटना रेलवे स्टेशन भी नहीं पहुँच पाये थे। खैर बेचैनी में ही किसी तरह पुनः गुमटी पर आये और रेलवे लाइन के किनारे-किनारे चलने को विवश हो गये, क्योंकि इसके अलावा उनके पास कोई चारा नहीं था।

अंधेरी रात, डगमग एवं पथरीले रास्ते, बीमार शरीर, ट्रेन छूटने का भय और ऊपर से भारी सामानों का बोझ, ये पाँचो मिलकर दुलारी बाबू की परेशानी में चार चाँद लगाये जा रहा था। दुलारी बाबू पर उस समय क्या गुजर रही होगी, वही जानें, मैं तो बस अनुमान लगा सकती हूँ। कुछ दूरी पैदल चलने के पश्चात् पटना जाने हेतु सड़क पर खड़ा एक टेम्पो मिला, जो

पैसेन्जर का इन्तजार कर रहा था। दुलारी बाबू टेम्पो पकड़ने के लिए मानो ऊपर से कूदने को तैयार हो गये, लेकिन उनकी नजर आगे में जब गढे पर पड़ी, तो उनके होश उड़ गये। कुछ कदम आगे बढ़ने पर किसी तरह नीचे उतरने का रास्ता भी था और तेजी से बढ़ने की भी कोशिश किए, लेकिन किस्मत का खेल, कोई पास कोई फेल, गन्तव्य स्थान पर पहुँचने से पहले ही टेम्पो आगे को निकल चुकी थी। दुलारी बाबू पुनः असहाय महसूस करने लगे और भगवान-भगवान का जाप करने लगे।

मनुष्य का स्वभाव ही है कि जब कभी भी उसके ऊपर गंभीर संकट आता है, तो वह भगवान को याद करता है। वैसे दुलारी बाबू अच्छे समय में भी भगवान का नाम लेते रहते हैं और उनको ऐसा महसूस होता रहता है कि उन्हें भगवान का आशीर्वाद प्राप्त है। बीमार शरीर और ऊपर से एक हाथ में सूजन एवं पूरा दर्द, ऊपर से ऐसी परिस्थिति में हिम्मत करके एक हाथ में अटैची और कंधे पर थैला उठाए कुछ पग चले ही थे कि थक कर चूर हो गये। आगे बढ़ने की क्षमता नहीं रही, पर समय तो बचाना था। फिर दोनों सामानों को दोनों हाथों में टांग आगे बढ़े। बीमार की अवस्था में ही फिर चले एवं लाचार होकर सामान को नीचे

रखकर कुछ क्षण के लिए आराम किए। समय का ध्यान आया, अटैची को रोड पर खींचने लगे एवं थैले को कंधे पर, कभी हाथ में तो कभी अटैची के ऊपर, मरता क्या न करता।

खैर कुछ दूरी तय करने के उपरान्त दुलारी बाबू रेलवे लाइन से रोड पर आकर टेम्पो की तलाश करते हुए आगे बढ़ते रहे। दुलारी बाबू अपने एक सहयोगी श्री संजय कुमार सिन्हा से मदद स्वरूप याचना की और उनसे कहा कि आप सिपारा बाई पास चले आयें। इधर संजय सिपारा बाई पास के लिए चल पड़ा और उधर दुलारी बाबू मिठापुर टेम्पो स्टैंड पहुँच गये। संजय को वहाँ न पाकर दुलारी बाबू बहुत परेशान होने लगे।

बुरे वक्त में इंसान के मन में बुरा ही विचार आता है। दुलारी बाबू को लगा कि संजय धोखा दे दिया। टेम्पो का अभाव था, इसलिए कोई भी टेम्पो चालक पाटलिपुत्रा स्टेशन जाने को तैयार नहीं हो रहा था। समय निकलता जा रहा था। आशा निराशा में परिवर्तन होने लगी। इस उधेड़-बुन में संजय टेम्पो स्टैंड पहुँच गया। दुलारी बाबू को थोड़ी आशा बंधी कि अब ट्रेन पकड़ा जाएगा। दुलारी बाबू पसीने-पसीने हो रहे थे। संजय जी दुलारी बाबू को ढाढ़स दिलाये कि अब घबराने की बात नहीं है, ट्रेन नहीं छूटेगी, लेकिन उन्हें

विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ट्रेन पकड़ाएगी। रास्ता जाम का भय उन्हें आगे भी सता रहा था। सामान को गाड़ी में रखा गया और संजय जी उन्हें लेकर चतुराई के साथ फौका रहने वाले लम्बे रास्ते से चल पड़े। ट्रेन छूटने के भय के कारण दुलारी बाबू को लगा कि यह रास्ता तो और भी लम्बा है, इस रास्ते से चलने पर समय ज्यादा लगने के कारण गाड़ी छूट जाएगी, लेकिन संजय जी अपनी सूझ-बूझ से दुलारी बाबू को पाटलिपुत्रा स्टेशन पहुँचा दिए।

सामने ट्रेन खड़ी थी, खुलने का समय लगभग हो चुका था। आनन-फानन में दुलारी अपने दोनों सामानों को लेकर पागल की तरह सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। आरक्षण ए०सी० कोच में था, जो ट्रेन में सबसे आगे लगा था। कोच की दूरी अधिक रहने के कारण गाड़ी पकड़ने के लिए पूर्व की भांति काफी मशक्कत करनी पड़ी। कभी थैला कंधे पर, कभी हाथ में तो कभी माथे पर करते-करते दूरी समाप्त हुई और दुलारी बाबू जैसे ही ट्रेन में चढ़कर सुस्ताने लगे, गाड़ी खुल गई। अपने बर्थ के पास पहुँचे, तो सामान रखने की भी जगह नहीं। इस पर दुलारी बाबू भन्ना उठे और कहने लगे आपलोग सामान रखने के लिए तो जगह दे दो, पर नहीं मिला।

एक आदमी, जो देखने में

अपनी पत्नी के साथ था, उनके बर्थ को कब्जा कर रखा था, पूछा कि आपका बर्थ कौन सा है? बर्थ की जानकारी मिलने पर उन्होंने दुलारी बाबू से अनुरोध किया कि आपको यदि कष्ट न हो तो आप मेरे बर्थ पर, जो साइड अपर का है, चले जायें, बहुत बड़ी कृपा होगी। अब तो दुलारी बाबू को मुँह-माँगा इनाम मिल गया, वही तो वे चाह रहे थे कि कोई साइड अपर बर्थ मिल जाय तो आजादी रहेगी। दुलारी बाबू साइड अपर सीट पर अपना सामान बारी-बारी से रखे और ऊपर चढ़कर सवार हो गये।

जब सब कुछ ठीक हो गया, तो उन्हें भूख-प्यास लगी। उनके पास खाने-पीने को कुछ नहीं था। कुछ पल के पश्चात् उन्होंने सोचा कि चलो पैन्ट्री कार वाला आएगा, तो उससे खाने-पीने की वस्तुएं ले ली जाएगी। पैन्ट्री कार के इन्तजार के साथ समय निकलता गया। न इन्तजार खत्म हुआ और न पैन्ट्री वाला कुछ लेकर आया। अन्त में भूखा-प्यासा राहगीर क्या न करता, दुलारी बाबू पैन्ट्री तक जाने का निश्चय बना लिये। पैन्ट्री का दरवाजा भीतर से बंद था। पूछने पर पता चला कि इस समय पैन्ट्री बंद रहता है। न पानी मिला और न कुछ खाने को। निराश होकर अपने बर्थ पर वापस आ गये, भूख-प्यास अपने पूरे सबाब पर

था। भूख-प्यास के मारे और ऊपर से पैन्ट्री बंद, मन तो पूरी तरह खिन्न हो गया था, पर क्या किया जा सकता था।

दुलारी बाबू बड़े प्यार से अपनी छोटी बहु की इच्छा पूरी करने हेतु लिच्ची एवं आम ले जा रहा था। लाचार होकर लीची में हाथ लगा दिये। दो-चार लीची मन से खाकर संतोष किए, चिन्ता थी बहु की, कहीं खत्म न हो जाय। किसी तरह रात गुजरी। सुबह पैन्ट्री वाला चाय लेकर आया। दुलारी बाबू तो चाय पीते नहीं थे, परन्तु “क्षुधा की आग ऐसी होती है कि न किए जाने वाले कार्य को भी करने पर मजबूर कर देता है।” दुलारी बाबू की चाहत न होते हुए भी चाय का आनंद लेना पड़ा। चाय पीकर थोड़ी शांति मिली। कुछ देर बाद उठे और हाथ मुँह धोते ही पैन्ट्री तक पहुँच गये। वहाँ से कुछ खाने का सामान खरीदे और वहीं पर दूट पड़े। खाने के उपरान्त आराम मिला और जैसे ही अपने बर्थ पर गये, क्षण भी नहीं बीता था, निद्रा में समा गये। नीन्द तब खुली जब पैन्ट्री वाला दोपहर के लंच का ऑर्डर लेने आया। खुशी-खुशी ऑर्डर दे दिए, भूख जो लगी थी।

तीसरे दिन सुबह-सुबह ट्रेन पुणे स्टेशन पहुँच गया। लड़का पहले से ही स्टेशन पर इन्तजार कर रहा था।

मुलाकात हुई, कुछ समय गुजरा और दुलारी बाबू अपने परिवार के पास पुणे में हाल-समाचार लेते हुए सुख-दुःख की बातें हुई। कुछ डाँट भी पड़ी और कुछ शाबाशी भी मिली तथा पुणे का समय खुशी-खुशी गुजरने लगा। कुछ

दिनों के पश्चात् अपनी पत्नी के साथ दुलारी बाबू पटना आ गये क्योंकि उन्हें कार्यालय में योगदान जो देना था। कार्यालय में योगदान देने के साथ ही रोजमर्रा की जिन्दगी गुजरने लगी।



■ ■ ■



रंजीत कुमार
डी.ई.ओ.

चूँ-चूँ चिड़िया

चूँ-चूँ चिड़िया घर उपवन में तू है उड़ती-फिरती,
रोज सवेरे आती, पर तू मेरे हाथ न आती।
सुनकर तेरी मीठी बोली सब का मन हर्षाता,
देख-देख तेरी चंचलता रोम-रोम सर्षाता।
फुर्र से उड़ जाती डाली पर जल में खूब नहाती,
धरती पर तू लोट-पोट कर अद्भुत खेल रचाती।
लगता जैसे स्वर्ग उतारकर पेड़ों पर इठलाती,
सुबह-शाम तू कलरव करके सबका ध्यान बटाती।
पेड़ों पर तू मौज उड़ाती पिंजड़े से कतराती,
आजादी से प्यार है तुझको बंधन से घबराती।
चूँ-चूँ चिड़िया घर उपवन में तू है उड़ती-फिरती,
रोज सवेरे आती, पर तू मेरे हाथ न आती।



चला जाता यूँही जो मैं कभी भगवान के मंदिर
करता दिल्ली वह भी समझ कर बावला मुझको।
इशारों में ही लगता पूछने वो खैरियत मुझसे,
कहता मिलने आया मुझसे या कुछ चाहिए तुझको।1।

पूछो खैरियत मुझसे तो लगता पाप ही मुझको,
बताना झूठ ही पड़ता कि मेरा हाल अच्छा है।
अगर तकदीर मेरी, माँ ने ही लिखा हुआ होता,
जरूरत क्या थी तेरे दर पे आने की भला मुझको।2।

मगर अनायास ही ख्वाहिश निकल गई मुँह से मेरे,
दिखे जो मुस्कुराते हम खींचे तस्वीर में एक संग।
मगर तुमसे तो अच्छा है मेरी तन्हाईयाँ हमदम,
बुरे दिन में जो रिश्तो के नहीं बदले हैं झूठे रंग।3।

लोग पत्थरों से खाकर ठोकर माँगते माफी
जताते गर्व से झुककर, ईश्वरीय संतान हैं हम।
मगर तोड़ कर अंदर से गुड़िया स्वयं, माटी का,
मंदिर का पत्थर कहे, पूज हमें भगवान हैं हम।4।

समय आया बुरा मुझपर तो छोड़ा अपनों ने दामन,
मगर उसकी बुरी नियत पे ना एतराज है तुमको।
गनीमत है कि जीना देर से शुरू ही किया
मैंने नहीं आँसू पूरे पड़ते कभी, मुझे जीभर के रोने को।5।

दर्द-ए-दिल बयां करना नहीं आया कभी मुझको,
जख्मों दिल पे मरहम भी लगाना भाया न मुझको।
ये शहर तेरा, खुदा तेरा और सब गवाह भी तेरे,
सितम ढाते रहे जो तुम, मिला इंसाफ ना मुझको।6।

दिखाते थे बदल चेहरा, समझ कर आइना मुझको,
गुनाहों को छिपाने में ना आया लाज भी तुमको।
वही मैं आइना हूँ टूट कर जो हथियार में बदला,
बेरहमी से तेरे दिल में उतर जाना है अब मुझको।7।

टूटे भगवान की मूर्ति न मंदिर में भी रखते हैं,
 गया हूँ मैं बिखर टूटकर रखूँगा मैं कहाँ खुदको।
 मगर तेरी महल के फानूसों में दीप रौशन जो,
 तेरी अरमान को है फूँकना उस आग से मुझको। 8।

उदर मे बाँधकर गमछा, जब मैं सोया रहता हूँ,
 सुकून आती है उसको जानकर भूखा बहुत मुझको।
 मगर बड़े रंगीन सपने ज्योंहि आते मेरी आँखों में,
 मधुर मेरे वो सपने रास ना आते कभी उसको। 9।

धू-धूकर जिगर जलता मेरा, अरमान बाकी है,
 राजा हरिश्चन्द्र सा मेरा भी इम्तिहान बाकी है।
 रुक जाना कुछ दिन आ रही गर मौत मुझको,
 चुकाना बेवफा का अब तलक लगान बाकी है। 10।



माई के दुलार

बनवारी सिंह
लेखाकार



काहे भूल गईले माई के दुलार बबुआ-12।

बबुआ रहलन नौ माह गर्भ के भीतर,
मइया पुजलस देवता पीतर,
तब करे लगली छठ ऐतवार बबुआ,
काहे भूल गईले माई के दुलार बबुआ-12।

नौ माह माई अपन गर्भ में रखलस,
कूली बनी के घर-बाहर ढोवलस।
जनम देइके माई तोरा गोदी में खेलैलो बबुआ,
काहे भूल गईले माई के दुलार बबुआ-12।

ई-बबुआ बाहर आके जब खेले-कूदे में उलझईलन,
माई अँगुली पकड़ के ज्ञानानिकेतन पहुँचईलन।
आईए-बीए पास करके घूमे लगलन बाजार बबुआ,
काहे भूल गईले माई के दुलार बबुआ-12।

शादी करके बहुरिया के जब घर में लइलन,
तब ओकरा देख के माई खूब हुलसइलन।
पीछे पड़े लगलन झडुअन के मार बबुआ,
काहे भूल गईले माई के दुलार बबुआ-12।

कहे बनवारी गाना भरी कविता बनाके,
माता-पिता के सेवा करे में ही है भलाई,
बगही बनाके माता-पिता के तीरथ घुमइह बबुआ,
काहे भूल गईले माई के दुलार बबुआ-12।

मान बनवारी सिंह के कविता वाली बात,
माता-पिता के खिलइह हर दिन दूध-भात,
आर्शीवाद पाई के पैइव स्वर्ग, होइव न निराश बबुआ,
काहे भूल गईले माई के दुलार बबुआ-12।

■ ■ ■



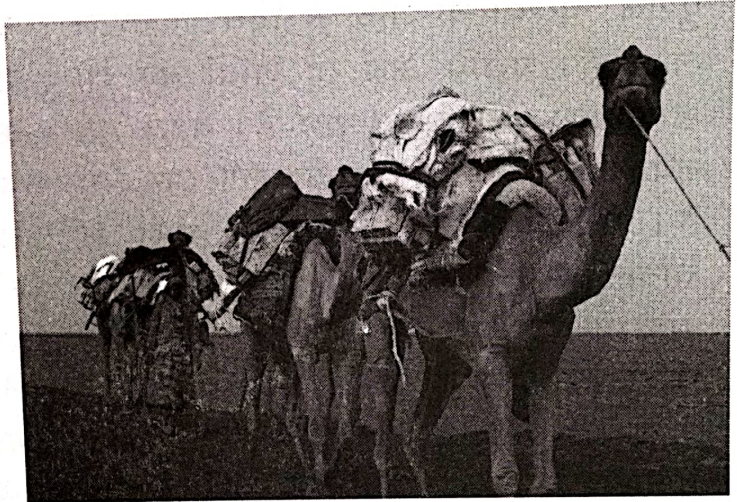
ऋषभ माँझी, कक्षा-2
पुत्र-श्री सत्येन्द्र माँझी।

ऊँट

ऊँट चला भई ऊँट चला,
हिलता डुलता ऊँट चला।
इतना ऊँचा ऊँट चला,
ऊँट चला भई ऊँट चला।

ऊँची गर्दन ऊँची पीठ,
पीठ उठाये ऊँट चला।
बालू है, तो होने दो,
बोझ ऊँट को ढोने दो।
ऊँट चला भई ऊँट चला।

गद्देदार वह पैर लिए,
दौड़ चलेगा बालू में।
बालू में भी ऊँट चला,
ऊँट चला भई ऊँट चला।



किस करवट पैटेगा ऊँट,
बता सकेगा कौन भला।
बालू में नहीं थकेगा ऊँट,
ऊँट चला भई ऊँट चला।

जाड़ा गर्मी हो या बरसात,
दौड़ा-दौड़ा ऊँट चला।
माल लादे ऊँट चला,
ऊँट चला भई ऊँट चला।

■ ■ ■

कटहर के बिया

श्रीराम पाण्डेय,
स०ले०अ०



दो-चार दिन पहले मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी कि मेरे मन को वह लगातार झंकृत एवं उद्वेलित कर रही है। बात गाँव की है, पहले के पुरातन-सनातन गाँव की।

गाँव की बात हो और मुझ जैसा गँवई लरजे नहीं, यह कैसे हो सकता है? जी हाँ, लगता है जैसे मैं उसी पुराने, पारंपरिक गाँव में विचरण करने लगा हूँ। यद्यपि अब तो गाँवों का भी शहरीकरण होता जा रहा है। बहुत हद तक ठीक भी है, अब बिजली आ गई है। गेहूँ पिसने, दाल दलने, धान से चावल बनाने की एवं अन्य बहुत-सी सुविधायुक्त मशीनें लगा दी गई हैं। परंतु इसका एक दूसरा पक्ष यह है कि गाँव अब गँवई मिठास खोते जा रहे हैं। हमारी परंपरायें जो हमारी धरोहर थीं, वह अब कहीं लूप्त हो गई हैं या फिर लूप्त हो रही हैं।

तब हमारा घर फूस का था, बल्कि उस समय लगभग गाँवों के सभी घर फूस के ही होते थे। मेरी दादी और माँ उस फूस के घर को भी लीप-पोतकर इतना चमका देती थीं कि एक सुई या पिन भी कहीं गिर जाये तो उसे आसानी से खोज सकते थे। गजब का हुनर तब महिलाओं में होता था। मेरी माँ परंपरागत खाना बनाने

में तो इतनी सिद्धहस्त थी कि गाँव की बहुधा महिलायें और लड़कियाँ उससे सिखने-पूछने के लिये आती थीं। इतनी खुबियों के बावजूद एक बात के कारण कभी-कभी मैं माँ से नाराज रहता था।

एक दूबली सी फटेहाल औरत हर सात-आठ दिन के अंतर में हमारे घर आती थी और दादी तथा माँ से ख़ूब बतियाती रहती थी। जाते समय माँ उसे चुपके से कुछ अन्न आदि पोटली में बाँधकर दे देती थी। लगता था जैसे ठकुरसुहाती बातें करके माँ को मोह लेती थी। जब वह मुझे देखती, बलात पकड़कर अपनी गोद में बिठा लेती। परंतु वह मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती थी। लालची थी तभी तो हर बार हमारे घर से कुछ न कुछ लेकर (मांगकर ही सही) जाती थी। परंतु घर में हम बच्चों को यह अधिकार कदापि नहीं दिया गया था कि माँ-बाप के सामने कुछ कह सकें या उनमें कोई कमी निकाल सकें। लेकिन माँ, माँ होती है। मेरे बिना कुछ कहे भी मेरे मनःस्थिति को ताड़ लेती थी।

जिस दिन वह सयानी-चतुर आती, हमारे घर में कटहल के बीज की सब्जी जरूर बनती थी और चावल के साथ वह मुझे इतना सुस्वादु लगती कि

क्या बताऊँ। दादी हँसते-हँसते मेरी माँ से कह बैठती, “ए दुलहिन, आज तऽ भात के तसली खाली हो जाई हो।” मैं समझता था कि माँ मुझे खुश करने के लिये (चुँकि मैं उस औरत से जला-भूना रहता था) ही वह सब्जी बनाती थी। “आवऽ बाबू आज तहार पसंद के कटहर के बिया के तरकारी बनल बा।”

समय परिवर्तनशील है। समय के साथ बदलना ही जीवन और समाज की नियती है और यही तो विकास है। परंतु उस समय की निराली बातें और सनातन भोजन का स्वाद आज भी भूलाये नहीं भूलता। कोहड़ा के दूसा (फूनगी एवं कोमल पत्तों) का साग, बूट (चना) एवं खेसारी-मटर का साग, जौ का सत्तू, काली केलाई (उरद) की जीरा एवं लाल सूखी मिर्च से छौंक लगी हुई गाढ़ी-चटक दाल (आह, आज भी मुँह में पानी आ जाता है), भूनी हुई तीसी के चूर्ण एवं लौकी की बनी हुई रसदार सब्जी (जिसके साथ आज भी चावल मिल जाये तो यकीन मानिये, मैं जितना खाता हूँ, उससे दोगुणा तो उदरस्थ कर ही लूँगा), अरुई के पत्ते में बेसन लपेटकर बना गिरवैछ (कोफ्ता) और उसी तरह के अनगिनत पारंपरिक व्यंजन बड़े ही मनोयोग से बनाये जाते थे।

लाख मना करने पर भी जब हम भाई-बहन चैत्र की रामनवमी में उपवास करने की हठ कर देते तो माँ मिट्टी के छोटे-छोटे मटकों में पानी भरकर इनारा (कुआँ) में रस्सी के

सहारे लटका देती और रात में जब हम घर वापस आते तो घुप्प अंधेरे में ही बिना किसी डर-भय के इनारा से उतार कर लाती तथा पीने के लिये देती। वह मीठा-शीतल जल पीने के बाद यही लगता कि यदि वास्तव में अमृत होता है तो बस वही हमसब पी रहे हैं। अब तो फ्रिज का पानी और बहुतेरे शीतल पेय पीने में भी वह आनंद नहीं मिलता।

उस समय कपड़े आदि भी बहुत ही पारंपरिक तरीकों से धोये जाते थे। माँ उन्हें एक बड़ी-सी कड़ाही में डालकर सोड़े के साथ उबालती और फिर कसकर निचोड़ने के बाद धूप में सुखाती। उबलने के कारण हमारे कमीज-पैंट के बटन सिकुड़कर बेतरतीब तथा भद्दे दिखने लगते। तब माँ जतन करके रखे हुए हमारे फटे-पुराने कपड़ों में से बटन निकालकर धोये हुए कमीज में टाँक देती। एक कमीज में कई तरह एवं कई रंगों के बटन हो जाते, लेकिन उससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। आज किसी माँ-बाप में है यह हिम्मत कि बिना मैचिंग वाले बटन के कपड़े अपने बच्चों को पहनाकर दिखा दें? औकात पता चल जायेगा (क्षमा करें, मेरी औकात भी इतनी ही है)।

तब माँ, पिता, गुरु, बड़ों की कही गई हर बात हमारे लिये आदेश से कम नहीं होती थी। याद है मुझे, हमारे गुरुजी जिन्हें हम थर्ड पंडीजी कहा करते थे, जरा-सी गलती हुई नहीं कि अपनी जिह्वा निकाल और उसी



तरह लपलपाती हुई पतली बेंत से हमारी खाल उधेड़ देते और तब हमारे माँ-बाप में यह पूछने की हिम्मत नहीं होती थी कि हमारे बच्चे को इतना क्यों मारे मास्टर साहब? मुगलीबान लगना तो आम बात थी। आज यदि कोई शिक्षक किसी विद्यार्थी को एक चपत भी लगा दे, तो स्थिति कितनी भयावह हो सकती है, हम सभी समझते हैं। हमारे बच्चे अब बहुत इंटेलेक्चुअल हो गये हैं (छोड़िये, बागवॉ फिल्म के उस डायलॉग को दूहराना नहीं चाहता)। वैसे इंटेलेक्चुअल तो अब हम भी हो गये हैं। कहाँ गये वे.....

आज ऑफिस से लौटकर आने में रात के नौ बज गये हैं। पत्नी से सीधे भोजन देने की बात कहने पर वह अनमने ढंग से चावल और साथ में कोई सब्जी मेरे सामने रख देती है। रात में यह खाना थोड़ा अटपटा लग रहा है, परंतु थकावट के कारण बिना कुछ कहे खाने लगता हूँ। “अरे यह कैसे”? बरबस मेरे मुँह से निकल जाता है। मुड़कर देखता हूँ, माँ तो सामने दीवार पर फ्रेम में है। फिर

कटहल के बीज की सब्जी और डुबहू वही स्वाद, वही महक, यह कैसे हो सकता है? पत्नी एक कोने की ओर इशारा करती है। अचानक मेरी नजर एक दुबली-पतली बूढ़ी काया पर जाती है। पहचानने की कोशिश करता हूँ, कामयाबी नहीं मिलती।

लगभग अपने शरीर को घसीटते हुए वह जर्जर काया मेरे पास आती है, “चिन्हलऽ बेटा, हम उहे तहार काकी हई।” मैं पहचान लेता हूँ। यह वही औरत है, जो अक्सर मेरे घर माँ से मिलने आया करती थी। “बाबू तहरा से मिलही खातीर हमार प्राण अटकल रहल हऽ। तहरा ईहे बुढिया कटहर के तरकारी खुब खियवले बिया, भूला गईलऽ का तूँ”। लगा, जैसे दीवार के फ्रेम से निकलकर माँ मेरे पास खड़ी है और मुझे कटहर के बिया की तरकारी परोस रही है। उस बूढ़ी माँ और मेरी, दोनों की पलकें अविरल अश्रूधारा प्रवाहित करने लगीं और मेरी पत्नी यह समझने का प्रयास कर रही थी कि आखिर यह माजरा है क्या?



■ ■ ■



हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर कार्यक्रम का आनंद लेते हुए
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), महालेखाकार (लेखा परीक्षा) एवं वरीय
उप महालेखाकार (प्रशासन)।



हिन्दी दिवस 2016 के अवसर पर महालेखाकार कार्यालय के अधिकारी एवं
कर्मचारीगण कार्यक्रम का आनंद लेते हुए ।

for